आज़ादी का अमृत महोत्सव

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

अइल किৰण OIL KIRAN | 2022 | वर्ष 19 अंक 30 |

पत्रिका प्रबंधकीय मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री प्रशांत बोरकाकोती
आवासी मुख्य कार्यपालक
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संरक्षक

श्री पलाश गोगोई
मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री अरूणज्योति बरुवा
मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री देवाशीष बोरा
महाप्रबंधक (जन संपर्क)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक

श्री दिगंत डेका
अधिकारी (राजभाषा)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल

डॉ. रमणजी झा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, निगमित कार्यालय, नोएडा

डॉ. विजय मोहन बरेजा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

श्री हरेकृष्ण बर्मन
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

डॉ. शैलेश त्रिपाठी
प्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

संपादन सहयोग

श्री दीपक प्रसाद
पर्यवेक्षण सहायक (ईजी-IV)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री विजय कुमार गुप्ता
पर्यवेक्षण सहायक (ईजी-I)पीजी
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान – 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

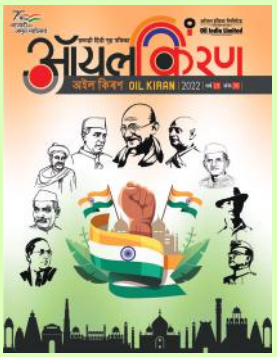

ऑयल किरण
वर्ष - 19, अंक - 30

आवरण – विषय
आजादी का अमृत महोत्सव

इस अंक में...

- डॉक्टर राहुल दासगुप्ता सर - एक संस्मरण 8
- हिन्दी भाषा और असमिया समाज 10
- राजभाषा हिंदी - वर्तमान स्थिति एवं संघर्ष 11
- कोरोना महामारी के बाद की भारतीय सामाजिक..... 14
- पाठ-गर्दन (Text Neck) 15
- 'केक कटिंग' 16
- नारी-मुक्ति 19
- भूजल की कमी को संबोधित करना: सीखने के लिए सबक 20
- चिकित्सा पर्यटन 22
- अतरंगी-सतरंगी कुआलालंपुर 23
- "नाम फाके" 26
- कश्मीर: जन्नत की यात्रा 30
- यादों की पोटली: दुलियाजान 33
- मन का बच्चा 35
- अभी बाकी है थोड़ा 35
- थोड़ा जी लें 36
- चलते चले जाओ 36
- हमारी प्यारी हिंदी भाषा 37
- सैनिक की पुकार ईश्वर से 37
- **ऑयल राजभाषा समाचार** 42-43

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक - दुलियाजान प्रिन्टिग वर्कस, दुलियाजान, दूरभाष - 94350 38552

श्री प्रशांत बोरकाकोती

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

आवासी मुख्य कार्यपालक
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान से अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' का लगातार प्रकाशन किया जा रहा है और साथ ही इस कार्य में आप सभी पाठकों से भरपूर योगदान मिल रहा है। हमें आपके समक्ष यह नवीनतम अंक 30, वर्ष 19 प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

भारत में हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा, राजभाषा और जनभाषा के रूप में सबसे अधिक स्वीकार की गई है। इस प्रकार कार्यालय के कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का दायित्व हम सभी पर आ जाता है। अतः मैं प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी से अपील करता हूँ कि आप अपने दैनंदिन काम-काज में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें और औरों को भी प्रेरित करें।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि हमारे कार्मिकगण दैनंदिन कार्य से संबंधित चुनौतियों अथवा अन्य समसामयिक विषयों पर रचना/लेख देकर पत्रिका की गुणवत्ता को बढ़ाने में अपना बहुमूल्य योगदान दें। शुभकामनाओं के साथ, मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ। साथ ही इस पत्रिका से जुड़े संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

सस्नेह,

प्रशांत बोरकाकोती

(प्रशांत बोरकाकोती)

श्री पलाश गोगोई

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

यह गौरव का विषय है कि हमारी गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का वर्ष 19, अंक 30 प्रकाशित होने जा रहा है। आशा करता हूं कि इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं, लेख, कविता आदि सभी पाठकों के लिए लाभप्रद सिद्ध होंगे।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उस देश की भाषा और संस्कृति की अहम भूमिका होती है। विश्व के सभी प्रमुख विकसित एवं विकासशील देश की उन्नति का राज है उनकी अपनी-अपनी भाषाओं में सभी सरकारी कार्य करना। हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। भाषायी विविधता एवं बहुभाषायी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिन्दी ने समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांध कर रखा है।

इसलिए मेरा कहना है कि हमें भी कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए। ऑयल कच्चे तेल का अन्वेषण, उत्पादन तथा परिवहन एवं प्राकृतिक गैस का वितरण करने के साथ ही भारत सरकार की राजभाषा नीति के पूर्ण क्रियान्वयन पर भी ध्यान देती है। इसी कड़ी में ऑयल इंडिया लिमिटेड नराकास, दुलियाजान की अध्यक्षता वर्षों से करती आ रही है जो राजभाषा हिन्दी के विकास की ओर उठाए गए सार्थक कदम को दर्शाता है। ऑयल अपने कार्मिकों के साथ-साथ नराकास, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकगणों को हिन्दी प्रशिक्षण, हिंदी के प्रतियोगिताओं में भाग लेने तथा "ऑयल किरण" में रचनाएं प्रकाशित करने का अवसर देती है।

मैं उन सभी को बधाई देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। "ऑयल किरण" के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। आशा करता हूँ कि यह अंक आप सभी के लिए सार्थक और उपयोगी होगा।

शुभकामनाओं सहित,

पलाश गोगोई

(पलाश गोगोई)

श्री अरुणज्योति बरूवा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारी अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का वर्ष 19, अंक 30 आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह नवीनतम अंक भी हिन्दी की सेवा में नूतन व उत्साही कदम सिद्ध हो, यही हमारी कामना है। इस अवसर पर मैं पूरे पत्रिका परिवार को बधाई देता हूँ।

हिंदी आज एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में उभर कर सामने आई है। संविधान में हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। सरकारी कामकाजों में हिन्दी का प्रयोग करना संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। इसी कर्तव्य के निर्वहन हेतु "ऑयल किरण" का प्रकाशन निरंतर किया जा रहा है। इसके माध्यम से हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ कार्मिकों व उनके आश्रितों की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान किया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति में पत्रिका "ऑयल किरण" पूर्णरूपेण सफल रही है।

मुझे विश्वास है कि "ऑयल किरण" का यह अंक भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को पूरा करने में सफल होगा। पत्रिका के आगामी अंक को और बेहतर बनाने हेतु आपके बहुमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित,

3/2021

(अरुणज्योति बरूवा)

श्री देवाशीष बोरा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

महाप्रबंधक (जन संपर्क) विभागाध्यक्ष
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

आप सभी के समक्ष हिंदी की अर्धवार्षिक गृह पत्रिका "ऑयल किरण" वर्ष 19, अंक 30 का नवीनतम अंक प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व होता है और यह सम्प्रेषण का माध्यम भी है। आपस में विचारों के आदान-प्रदान हेतु सबसे उत्तम साधन हिन्दी भाषा ही है। हिन्दी देश की संपर्क भाषा और राजभाषा दोनों है। हिंदी का प्रयोग अब पूरे भारत में संपर्क भाषा के रूप में हो रहा है। इसलिए शासन के कामकाज में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में हमारी कंपनी अनवरत प्रयासरत रहती है। हिंदी पत्रिका "ऑयल किरण" का निरंतर प्रकाशन किया जाना इसका जीवंत उदाहरण है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में हिंदी पत्रिका का योगदान अनमोल है। कार्मिकों से आग्रह है कि वे अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करें क्योंकि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है।

मैं इस पत्रिका से जुड़े संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। यह भी आशा करता हूं कि आप हमें अपने बहुमूल्य सुझावों से अवश्य अनुगृहीत करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

डी. बोरा

(देवाशीष बोरा)

श्री दिगंत डेका

सम्पादकीय

ऑयल इंडिया लिमिटेड की हिंदी में प्रकाशित होने वाली एकमात्र अर्धवार्षिक गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का वर्ष 19, अंक 30 अपने नए कलेवर और साज-सज्जा के साथ आपके हाथों में है। इसका प्रकाशन वर्षों से निरंतर होता आ रहा है जिसमें आप सभी का बहुमूल्य योगदान है, जिसके लिए मैं आप सभी को पूरे राजभाषा परिवार की तरफ से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप सभी का भरपूर समर्थन और सहयोग पूर्व की भांति मिलता रहेगा।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस प्रकार देखें तो कार्यालय के कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक करने का दायित्व हम सभी पर आ जाता है। सही मायने में कहें तो हिन्दी में काम करना राष्ट्र-सेवा के समान है। अतः हमें अपने दैनंदिन कार्यों में अधिक से अधिक हिन्दी भाषा में कार्य करने का प्रयास करना चाहिए जिससे दूसरे लोग भी प्रेरित हों। हिन्दी में काम करना आसान है, बस आपको शुरू करने की देरी है।

भारत सरकार की राजभाषा-नीति के अंतर्गत सभी कार्यालयों के कामकाज में हिन्दी भाषा के अधिक से अधिक प्रयोग को सुनिश्चित करना है। इसी कड़ी में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुए हमारी कंपनी ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने कार्मिकों के लिए हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत) का आयोजन कराती है। इसके साथ-साथ यह नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की अध्यक्षता का पदभार भी संभाले हुए है। इतना ही नहीं, कार्मिकों को कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी भाषा के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए राजभाषा कार्यशाला, राजभाषा महोत्सव, विश्व हिन्दी दिवस, हिन्दी तिमाही बैठकें, हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताएं, राजभाषा संवाद कार्यक्रम आदि कई कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। ऑयल के कार्यक्रमों को सिर्फ ऑयल के कार्मिकों तक ही सीमित न रख कर कार्मिकों के आश्रितों, नराकास के सदस्य कार्यालयों एवं प्रचालन क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए भी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

हमारा सदैव प्रयास रहा है कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। राजभाषा हिन्दी के प्रति आज कार्मिकों के रुझान के कारण ही हिंदी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन किया जा रहा है। फलस्वरूप ऑयल इंडिया लिमिटेड को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य निष्पादन हेतु वर्ष 2020-21 के लिए भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा 38$^{वें}$ त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन में "राजभाषा दिगंत" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों/आश्रितों को सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान कर राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। इस पत्रिका के प्रकाशन को यथार्थ रूप देने वाले सभी रचनाकारों का मैं आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी। आशा करता हूं कि आपको 'ऑयल किरण' का यह अंक पसंद आएगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

दिगंत डेका

(दिगंत डेका)
अधिकारी (राजभाषा)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

डॉक्टर राहुल दासगुप्ता सर - एक संस्मरण

✍ **पवन कुमार सिंह**
मुख्य भूभौतिकीविद
भूभौतिकी विभाग, दुलियाजान

वर्ष 2007 में ऑयल इंडिया लिमिटेड में शामिल होने के बाद; एक प्रशिक्षु के रूप में मैंने डॉ. राहुल दासगुप्ता सर के मार्गदर्शन में काम किया। उस समय, वे 'अनुसंधान और विकास भवन' की दूसरी मंजिल पर बैठते थे। सबसे पहले मैंने देखा कि हर सुबह वे प्रत्येक सहयोगियों सदस्य के साथ चाय पर चर्चा करते थे और ज्यादातर चर्चा निजी जीवन की होती थी। उनकी ओर से उनका छोटा-सा कदम, उत्कृष्ट कार्य-वातावरण को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। सभी लोग देर शाम तक कार्यालय में काम करते थे और प्रशिक्षु-छात्रावास के लिए बस के बजाय, हम उनकी आधिकारिक कार (एम्बेस्डर 5334) से छात्रावास लौटते थे।

प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर के पूर्व छात्र के अलावा, उन्होंने लीड्स विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति (पीएच. डी) की उपाधि ग्रहण की। उन्हें विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित तेल कंपनियों में से कई से कॉल आते थे, विशेष रूप से उन्हें अपनी कंपनियों में शामिल करने के लिए। वे हमेशा जवाब देते थे कि मैं ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान में बहुत खुश हूं और अगर मैं खुश हूं तो आपकी कंपनी में क्यों शामिल होऊं। ऑयल इंडिया उनकी आत्मा और दिल में था और कोई भी उनके सामने ऑयल इंडिया की आलोचना नहीं कर सकता था।

वर्ष 2008 में भूभौतिकी विभाग के प्रमुख का पदभार संभालने के बाद, पहले दिन मैं उनसे मिला और उन्होंने मुझसे नोटबुक और कलम के साथ आने को कहा। यह छोटी-सी सीख महत्वपूर्ण थी और आज भी मैं अपने पास नोटबुक और पेन हमेशा रखता हूँ। बहुत बार वे हमारे अंग्रेजी लेखन कौशल की आलोचना करते थे और पत्र और रिपोर्ट लेखन पर प्रशिक्षण देने की कोशिश करते थे। उनके द्वारा किए गए प्रयासों ने हमारे लेखन कौशल को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अपनी खुद की मारुति कार के साथ सुबह 07:00 बजे से पहले कार्यालय पहुंचते थे और उन्होंने किसी व्यक्ति को समय पर कार्यालय आने के लिए कभी कठोरता से नहीं कहा, लेकिन सुबह के शुरुआती घंटों में वे बहुत लोगों को बुलाते थे या फोन करते थे और परिणामस्वरूप लोग समय पर कार्यालय पहुंचते थे। अधीनस्थों को कुछ काम सौंपने के बाद, रोज़ शाम को वे उस व्यक्ति से बात करके कार्य की प्रगति और चुनौतियों के बारे में पूछते थे। प्रत्येक कार्य की निगरानी का यह उत्कृष्ट तरीका लोगों को जीवंत बनाने में सहायक था। वे अपने बड़े और भारी लैपटॉप ट्रॉली बैग के साथ प्रतिदिन शाम 06:00 बजे प्रसंस्करण केंद्र में आते थे और हर व्यक्ति के चल रहे अध्ययन पर तकनीकी चर्चा करते थे। उसके बाद 'ऑयल इंडिया एग्जीक्यूटिव एसोसिएशन' के प्रेजिडेंट होने की वजह से सहयोगियों के साथ एसोसिएशन के काम की चर्चा करते थे।

कई बार, जब हमें आंदोलन और हड़ताल के कारण कार्यालय से लौटना पड़ता था, तो गंतव्य उनका बंगला ई-89 होता था। उस दिन हम सबका लंच उनके घर पर होता और वे कहते थे कि उस कमरे के अंदर जाओ और जो भी पीना पसंद करो, ले आओ। नई पीढ़ी अलमारी से सबसे अच्छा विकल्प चुनने के लिए काफी स्मार्ट थी। होली के दौरान, क्लब के बजाय, उनका घर हमारे लिए अंतिम गंतव्य था। उन्होंने हमारे काम करने वाले समूह को भूभौतिकी में बहुत प्रेरित, आकर्षक और जीवंत बनाया। बाद में, उत्तरपूर्वी-सीमांत परियोजना के प्रभारी के रूप में कार्यभार संभालने के दौरान, उनके गतिशील नेतृत्व ने केवल मिजोरम में अत्यंत कठिन इलाके सहित हमारे कई एनईएलपी ब्लॉकों में प्रतिबद्ध-कार्य-कार्यक्रम को तेज करना संभव बनाया। उनके दूरदर्शी नेतृत्व में, हमें पेट्रोटेक 2014

सम्मेलन के दौरान प्रदर्शनी में सर्वश्रेष्ठ स्टॉल का पुरस्कार मिला।

अचानक, उन्हें गंभीर स्वास्थ्य-संबंधी समस्याओं का पता चला और उन्हें नोएडा में कॉर्पोरेट कार्यालय का रुख करना पड़ा। शुरुआती कठिन महीनों से गुजरने के बाद, उन्होंने अपना जीवन काम करने वाली प्रकृति के साथ गुजारा, हालांकि शारीरिक स्थिति कई चीजों को करने के लिए प्रतिबंधित थी। एक बार मैं दिल्ली में था और उन्होंने मुझे कुछ मिठाई और ढोकला खाने के लिए बुलाया। मैंने इसका कारण पूछा और ऑफिस में बैठे अधिकारियों ने बताया कि सर ने आज कुछ खरीदारी की है और इस अवसर पर वे अपने सहकर्मी को मिठाई खिला रहे हैं। मुझे आश्चर्य हुआ की सर लंच से पहले तक यहीं थे और फिर स्पष्ट हुआ कि, सर लंच के समय खरीदारी के लिए गए और सबसे पहले एमएस शो रूम से शर्ट पैंट के 5-6 सेट उठाए और फिर 10 मिनट में ऐप्पल स्टोर से नवीनतम आई-फोन और वहां से एक लैपटॉप। आप 20 मिनट में इतनी खरीदारी कैसे कर सकते हैं? वे हमेशा कहते थे कि अप्रासंगिक बातों में अपना समय बर्बाद मत करो, एक दूरदर्शी भूवैज्ञानिक के लिए प्रासंगिक बात कपड़े की खरीदारी करना नहीं हो सकता।

वे वर्ष 2019 में ऑयल इंडिया लिमिटेड की सेवा से कार्यकारी निदेशक (कॉर्पोरेट मामले) पद से सेवानिवृत्त हो गए, और सौभाग्य से उनकी स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं काफी हद तक ठीक हो गई। मैंने उनसे सेवानिवृत्ति के बाद नियमित बातचीत की और उनसे मुझे हमेशा प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलती रही। अंतिम कॉल मैंने 16/04/2021 को उनके जन्मदिन पर किया और लंबे समय तक बातचीत हुई। उन्होंने आगामी दिनों में अपनी योजनाओं के बारे में बताया, जिनमें एक पुस्तक प्रकाशन (जो अंतिम चरण में था), सरस्वती-नदी पर हवाई चित्रों और भूवैज्ञानिक आंकड़ों पर कुछ शोध शामिल था। वे भूविज्ञान और आनुवंशिकी की मदद से भारत में आर्यों की उत्पत्ति से संबंधित अनुसंधान कर रहे थे और इस उद्देश्य के लिए आनुवंशिकी के प्रसिद्ध प्रोफेसर के संपर्क में थे। मैंने उनसे छात्रों के लिए वेबिनार के लिए अनुरोध किया और उन्होंने बताया कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर ने उनसे इसके लिए संपर्क किया है। हमने विषय पर विस्तृत चर्चा की थी और मैंने उसके लिए स्लाइड बनाना शुरू कर दिया था। दुर्भाग्य से, वह दिन कभी नहीं आएगा।

मैं जयपुर में सोसाइटी ऑफ पेट्रोलियम जियोफिजिसिस्ट सम्मेलन के दौरान एक बैठक में भाग ले रहा था। सोसायटी के पूर्व संरक्षक (और ओएनजीसी के पूर्व निदेशक) ने सोसाइटी के नियम में बदलाव की बात की ताकि दासगुप्ता सर को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' पुरस्कार से सम्मानित किया जा सके। ऑयल इंडिया लिमिटेड से एक भूभौतिकीविद् होने के नाते, यह मेरे लिए गर्व का क्षण था।

दुर्भाग्य से, 29/04/2021 के बाद वह दिन कभी भी नहीं आएगा। क्षण समाप्त हो गए, यादें हमेशा के लिए हैं! ❑

प्रेरक प्रसंग

परिश्रम के साथ धैर्य भी

एक बार भगवान बुद्ध अपने अनुयायियों के साथ किसी गाँव में उपदेश देने जा रहे थे। उस गाँव से पूर्व ही मार्ग में उनलोगों को जगह-जगह बहुत सारे गड्ढे खुदे हुए मिले। बुद्ध के एक शिष्य ने उन गड्ढों को देखकर जिज्ञासा प्रकट की, आखिर इस तरह गड्ढे का खुदे होने का तात्पर्य क्या है?

बुद्ध बोले, पानी की तलाश में किसी व्यक्ति ने इतने गड्ढे खोदे हैं। यदि वह धैर्यपूर्वक एक ही स्थान पर गड्ढा खोदता तो उसे पानी अवश्य मिल जाता। पर वह थोड़ी देर गड्ढा खोदता और पानी न मिलने पर दूसरा गड्ढा खोदना शुरू कर देता।

व्यक्ति को परिश्रम करने के साथ-साथ धैर्य भी रखना चाहिए।

हिन्दी भाषा और असमिया समाज

✍ **प्रणय दास**
तकनीशियन -1
रसायन विभाग, दुलियाजान

भारत एक प्राचीन देश तथा राष्ट्र है। भारत को ऋषि-मुनियों का देश भी कहा जाता है। संस्कृत भारत की प्राचीन भाषा है और गीता, महाभारत, रामायण, वेद-पुराण आदि सभी धर्म ग्रंथ संस्कृत भाषा या देव भाषा में लिखे गए हैं। हिन्दी को भारत के लगभग सभी राज्य के अधिकतर लोग समझते, बोलते और लिखते हैं। हिन्दी भाषा की लिपि हमारी प्राचीन संस्कृत भाषा की देवनागरी लिपि से मिलने के कारण हमारे पूर्वज इसी भाषा में कथोपकथन करते थे। इसलिए भारत मूल के अधिकतर निवासी सभी प्रांतों में हिन्दी भाषा को सही तरह से समझते हैं और हिन्दी साहित्य की चर्चा करते हैं। हिन्दी भाषा की सहजता-सरलता के कारण आधुनिक युग में भारत में हिन्दी भाषा का प्रचलन अधिक हो रहा है।

उत्तरपूर्व में सौ से भी अधिक जाति-जनगोष्ठी रहती हैं और सभी की अपनी भाषाएँ और उपभाषाएँ है। असम उत्तरपूर्व के अग्रज और उन्नत राज्यों में गिना जाता है। असम भी बहुत सी जाति-जनगोष्ठीयों से भरा हुआ राज्य है और इन सभी जाति और जनगोष्ठीयों की अपनी-अपनी समृद्धशील संस्कृति, भाषा और साहित्य हैं। आहोम, मराण, मटक, कोच, कलिता, बोड़ो, कार्बी, चुतिया, मिसिंग, चिंफौ आदि बहुत सी जाति-जनगोष्ठी है और सभी अपने साहित्य की चर्चा करते हैं। असम समतल भूमि होने के कारण यहाँ यातायात व्यवस्था अधिक सचल है। उत्तरपूर्व के सभी राज्यों को भारत के विभिन्न प्रांतों से जोड़कर रखा है। असम व्यवसाय-वाणिज्य में भी उत्तरपूर्व के अन्य राज्यों से आगे है और स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, अस्पताल, मेडिकेल कॉलेज आदि असम में होने के कारण उत्तरपूर्व के अन्य राज्यों के लोगों का यहाँ आगमन होता है। अन्य राज्यों के लोग स्थानीय लोगों से अंग्रेजी और ज्यादातर हिन्दी में बातचीत करते हैं क्योंकि यह भाषा सरल है और असम के अधिकतर लोग हिन्दी भाषा समझते हैं।

असमिया समाज में हिन्दी का प्रचलन अधिक होता दिखाई दे रहा है। असम के बहुत से बच्चे पढ़ाई के लिए बाहर के राज्यों में जा रहे हैं और वहाँ वे लोग हिन्दी भाषा में ही वार्तालाप करते हैं और अपने विचार व्यक्त करते हैं। असमिया समाज ने हिन्दी भाषा को अपनाने के कारण भारत में और अपना सम्मान बढ़ाने में कामयाबी हासिल की है। राजनैतिक, सांस्कृतिक, खेल आदि विभिन्न विषयों में असम के लोगों ने भारत के अन्य राज्य के बीच अपनी जगह बनायी है और यह मुमकिन हुआ अपने बुद्धि विचार को हिन्दी भाषा में सबके सामने प्रस्तुत करके। हिन्दी भाषा को अपनाने के कारण असम के बच्चे बालिवुड में भी अपनी जगह बना रहे हैं। कई धारावाहिकों में स्पष्ट हिन्दी बोलकर असम के बच्चे सुंदर प्रदर्शन करके दर्शकों का मन जीत रहे हैं। भारतरत्न डॉ भूपेन हाजरिका ने असमिया के अलावा हिन्दी में गाना गा कर भारत में अपना परिचय बनाया और असम का सम्मान बढ़ाने के अलावा भी हिन्दी भाषा-साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया।

वर्तमान में जुबिन गर्ग, पापन आदि गायक ने हिंदी में बहुत से गाने गाकर अपना परिचय बनाने में कामयाब हुए और भारत के हर प्रान्त के लोग इन दोनों के साथ-साथ असम और असमिया समाज को जानने लगे हैं और यहाँ के लोगों की कला-संस्कृति को अपनाने लगे हैं।

हिंदी भाषा को अपनाने के कारण असम के लोगों की प्रतिभा सिर्फ असम में ही सीमित न रहकर, पूरे भारत में चर्चा का विषय होने लगी है। उसके साथ-साथ हिन्दी भाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति को भारत के अन्य राज्यों या लोगों तक व्यापक रूप में विस्तार करने में सफल हो सके हैं। इसके कारण भारत के अन्य प्रान्तों के लोगों से वे और सम्मान जुटाने में सफल रहें हैं। यह केवल हिन्दी भाषा के माध्यम से ही सफल हो पाया।

हिन्दी भाषा भारत के सभी राज्यों को आपस में जोड़ने का काम करती है। किसी भी प्रांत के लोग जब दूसरे प्रांत के लोगों से मिलते है तब वे जात-पात, वर्ण, धर्म सब भूलाकर हिन्दी भाषा में आपस में बातचीत करते हैं, जिसके चलते अपने मन की बात को एक दूसरे के साथ व्यक्त करके आपस में भाईचारे को बढ़ाने में सहायता भी कर रहे हैं। जैसे रंग-बिरंगी फूलों को एकजुट करके एक सुन्दर माला बनती हैं ठीक उसी तरह से भारत के हर राज्य और उन राज्यों में प्रचलित भाषा-उपभाषा, साहित्य-संस्कृति मिलकर एक माला बनती है, यही कारण है कि भारत दुनिया का एक अनोखा देश है। ❑

राजभाषा हिंदी - वर्तमान स्थिति एवं संघर्ष

✍ **ऋतुराज बोरा,**
वरिष्ठ सहायक - 1
सामग्री विभाग, दुलियाजान

परिचय :

भाषा मानव सभ्यता में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भाषा के माध्यम से मानव ने सामाजिक जीवन की शुरुआत की और इससे "मानव-सभ्यता" के विभिन्न चरणों का आरंभ हुआ। भाषा अपने विचारों, चिंतन, आवश्यकताओं एवं भावों को शब्दों में परिवर्तित करने का साधन है जो एक सामाजिक जीवन जीने के लिए अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक राष्ट्र में भाषा एक महत्वपूर्ण सूत्र है जो उस राष्ट्र के लोगों को एक सूत्र में जोड़ती है। एक राष्ट्रभाषा एकता को बढ़ाती है, देशवासियों के मध्य विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करती है और समुचित आर्थिक विकास एवं सुचारु राज-व्यवस्थता के लिए भी जरूरी होती है। डॉ. अंबेडकर ने भी एक राष्ट्रभाषा की महत्ता को भारत के परिप्रेक्ष्य में समझा और कहा - "स्वतंत्र राष्ट्रीयता और स्वतंत्र राज्य के बीच में एक संकरी सड़क ही होती है। भाषा के आधार पर राज्यों का विभाजन उचित तो है किंतु यही भाषा उनको एक स्वतंत्र राज्य में विकसित करने में सक्षम है।" भाषा विज्ञान के अनुसार हिंदी एक पूर्ण भाषा है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखें तो भारतवर्ष में हिंदी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी बोलने वालों की अपेक्षा बहुत अधिक है। अत: हम इसे संपर्क भाषा की संज्ञा देते हैं। जिस भाषा में हम अधिकतम लोगों से सम्पर्क कर सकते हैं वही भाषा सम्पर्क भाषा कहलाने की हकदार है। अत: हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ सम्पर्क भाषा भी है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था - "राष्ट्र के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सब से अधिक सहायक है।"

भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रभाषा हिंदी

भारत एक राष्ट्र-राज्य नहीं अपितु राज्य-राष्ट्र है अर्थात इसमें कई सारी राष्ट्रीयतायें मिलकर भारतीय राष्ट्रीयता का समन्वय करती हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि भारत विविध धर्मों, पंथों, भाषाओं, रीति-रिवाजों इत्यादि का अद्भुत संगम है। भारत की एकता का कारण ऐतिहासिक, धार्मिक, आत्मिक समरूपता में है जहाँ उसने हर धर्म, पंथ, समुदाय को अपनाकर अपनी संस्कृति में ढाल लिया और साथ में विभिन्न समुदायों, भाषाओं को पनपने व विकसित होने का अवसर भी दिया। भारतीय संस्कृति को कुछ शब्दों में व्यक्त करना हो तो हम कह सकते हैं "वसुधैव कुटुम्बकम्"। जब 1956 में भाषीय राज्य गठित किये गये तो इस कदम ने भारतीयता को सुदृढ़ किया। इसलिए राष्ट्रभाषा का मुद्दा भारत राष्ट्र के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण किंतु जटिल मुद्दा है।

हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति

भारत के संविधान में देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है (अनुच्छेद 343(1))। हिंदी की गिनती भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल पच्चीस भाषाओं में की जाती है। भारतीय संविधान में व्यवस्था है कि केंद्र सरकार के पत्राचार की भाषा हिंदी और अंग्रेजी होगी। यह विचार किया गया था कि 1965 तक हिंदी पूर्णतः केंद्र सरकार के कामकाज की भाषा बन जाएगी (अनुच्छेद 344 (2) और अनुच्छेद 351 में वर्णित निदेशों के अनुसार), साथ ही राज्य सरकारें अपनी पसंद की भाषा में कामकाज संचालित करने के लिए स्वतंत्र होंगी। लेकिन राजभाषा अधिनियम (1963) को पारित करके यह व्यवस्था की गई कि सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग भी अनिश्चित काल के लिए जारी रखा जाए। अतः अब भी सरकारी दस्तावेजों, न्यायालयों आदि में अंग्रेजी का इस्तेमाल होता है। भारत की भाषायी स्थिति और उसमें हिंदी के स्थान को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा है। हिंदी की भाषागत विशेषता यह है कि उसे सीखना और व्यवहार में लाना अन्य भाषाओं के अपेक्षा ज्यादा सुविधाजनक और आसान है। हिंदी भाषा में एक विशेषता यह भी है कि वह लोक भाषा की विशेषताओं से संपन्न है, बड़े पैमाने पर अशिक्षित लोचदार भाषा है, जिससे वह दूसरी भाषाओं

में शब्दों, वाक्य-संरचना और बोलचाल जन्य आग्रहों को स्वीकार करने में समर्थ है। भारत की भाषायी विविधता के बीच भारत की भाषायी पहचान मुख्यत: हिंदी है। भारत के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के आधार पर बने नगरों और महानगरों में भारत की राष्ट्रीय एकता और सामाजिक संस्कृति का स्वरूप देखने को मिलता है। आज की स्थिति में भी भारत में हिंदी की जो राष्ट्रीय भूमिका है, उतना भी उसके अंतरराष्ट्रीय महत्व को महसूस कराने में समर्थ है।

हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति एवं उसके भविष्य के विषय में प्रायः हताशापूर्ण विचार सुनने पढ़ने को मिलते हैं परंतु वस्तुस्थिति यह है कि आज हिंदी की स्थिति पूर्व से अधिक सुदृढ़ है एवं उसका भविष्य अधिक उज्ज्वल है। किसी भाषा का भविष्य मुख्यतः चार मानकों से नापा जा सकता है: जनमानस में उस भाषा की प्रतिष्ठा, जीविकोपार्जन हेतु भाषा की उपयोगिता, भाषा के प्रसार माध्यमों की निरावरोध उपलब्धता एवं भाषा में अन्य भाषाओं के आवश्यक शब्दों को समाहित कर लेने की क्षमता। इन चारों ही मानकों पर हिंदी की स्थिति पहले से बहुत अच्छी है।

स्वतंत्रता के पश्चात बीसियों वर्ष तक स्थिति यह रही कि हिंदी बोलने वालों को कोई भी अंग्रेज़ी में बोलने वाला व्यक्ति अपने से श्रेष्ठ लगने लगता था। आई.ए.एस., पी.सी.एस. आदि परीक्षाओं का माध्यम केवल अंग्रेज़ी होने के कारण भी सभी भारतीयों के मानस में अंग्रेज़ी का वर्चस्व था। आज हिंदी बोलने वाला व्यक्ति अंग्रेज़ी बोलने वाले के सामने बिना हीन-भाव की अनुभूति किए अपनी भाषा में बोलना जारी रखता है। जनमानस में हिंदी की प्रतिष्ठा निरंतर बढ़ रही है।

हिंदी के प्रसार हेतु केंद्रीय शासन के विभागों में हिंदी अधिकारी नियुक्त हैं और हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिंदी सप्ताह मनाया जाता है। यद्यपि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में अभी हिंदी के माध्यम से नौकरी पाना सम्भव नहीं है, परंतु जिस प्रकार अमेरिका, यूरोप और चीन भारत में उभरते ग्रामीण मध्यवर्ग में अपना माल बेचने को लालायित हो रहे हैं, वह दिन दूर नहीं जब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में भी हिंदी जीविकोपार्जन का साधन बन जायेगी।

आज हमारे देश की जनसंख्या लगभग सवा सौ करोड़ है जो दुनियां के सभी देशों से ज्यादा है। अत: हमारा देश विश्व व्यापार का एक बहुत बड़ा केंद्र है। सारे विकसित देश चीन, जापान, अमेरिका आदि सभी हमारे साथ व्यापार बढ़ाना चाहते हैं। व्यापार में संवाद बहुत ही आवश्यक है। अत: दूसरे देशों के लोग भी हिंदी सीखने में उत्सुकता दिखाने लगे हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व में हिंदी सीखने वालों की संख्या बढ़ी है। 1991 की जनगणना में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से अधिक है। इतना ही नहीं, विश्व में हिंदी प्रयोग करने वालों की संख्या चीनी से भी अधिक है और हिंदी अब प्रथम स्थान पर है। उसने विश्व की अंग्रेज़ी समेत अन्य सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया है।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ एवं संघर्ष

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी राष्ट्रभाषा के दर्जे से अभी भी बहुत दूर है और इसके समक्ष कई चुनौतियाँ हैं जिसके पहले की हिंदी एक राष्ट्रभाषा बन सके।

अंग्रेजी भाषा की चुनौती

वैश्वीकरण के इस दौर में अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। यह एक तकनीकी भाषा के रूप में विश्व की सभी भाषाओं को चुनौती दे रही है। इसके अलावा भारत की राजकीय भाषा, अंतर्राष्ट्रीय एवं मध्यस्थ भाषा के रूप में भी इसका उपयोग बढ़ता जा रहा है। आर्थिक विकास की आवश्यकताओं के कारण अंग्रेजी की मांग बढ़ रही है क्योंकि उभरते हुए नये सेवा-उद्योग अंग्रेजी का भरपूर उपयोग कर रहे हैं।

अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की भावनाओं का असर

जब भी हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने की कोशिश की गयी उसका व्यापक राजनैतिक विरोध किया गया क्योंकि क्षेत्रीय भाषा एक संवेदनशील मुद्दा है और लोगों की भावनाओं से जुड़ा हुआ है। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये इसकी स्वीकार्यता को बढ़ाना होगा।

बढ़ती हुई क्लिष्टता –

स्वतंत्रता के पश्चात्, हिंदी को शुद्ध करने एवं संपूर्ण भाषा बनाने के उत्साह में उसका संस्कृतीकरण आरंभ हो गया। कई सामान्य उपयोग के शब्द जो विभिन्न लोक भाषाओं, अन्य भाषाओं, उर्दू के लिये गये थे, उनका तिरस्कार किया जाने लगा, जिससे हिंदी की कठिनता बढ़ती गई और वह सामान्य लोगों की जनभाषा से दूर होती गयी। इसका लाभ अंग्रेजी ने उठाया।

हिंदी को तकनीकी भाषा के रूप में उपयोग करने में कठिनता

हिन्दी के अलावा भारतीय भाषाओं को तकनीकी क्षेत्रों में उपयोग करने में अनुपयुक्त देखा गया है जो कि एक चुनौती है क्योंकि

तकनीकी विकास मुख्यतः पश्चिमी देशों में हुआ है अतः पश्चिमी भाषाओं के शब्द ही मुख्यतः विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में प्रयोग किये जाते हैं। उनका भारतीयकरण व हिंदी अनुवाद कठिनता को बढ़ाये बिना एक बड़ी चुनौती है।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी भाषा की संभावनायें –

इन सब चुनौतियों के बावजूद कई सारी परिस्थितियाँ हैं, जो हिंदी को एक राष्ट्रभाषा के रूप में आगे भी बढ़ा रही हैं।

इंटरनेट तकनीकी द्वारा प्रोत्साहन

यू.टी.एफ. एनकोडिंग के उपयोग से हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषायें आसानी से इंटरनेट में अधिकाधिक उपयोग में लायी जा रहीं हैं। ब्लॉग, फेसबुक, ट्वीटर इत्यादि इंटरनेट द्वारा दिये गये ऐसे उपकरण हैं जो हिंदी के उपयोग को नये कलेवर से प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसकी वजह से कंप्यूटरों एवं नवीनतम स्मार्ट मोबाइलों में भी हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है और युवा वर्ग हिंदी को एक नये रूप में उपयोग कर रहा है।

आर्थिक विकास द्वारा प्रोत्साहन

देश का युवा अब राजनीतिक मुद्दों से ऊपर उठकर रोजगार एवं आर्थिक विकास को अधिक प्राथमिकता देता है। दक्षिणी राज्यों में इस वजह से हिन्दी को अधिक स्वीकार्यता मिल रही है क्योंकि हिंदी देश की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।

मीडिया एवं फिल्मों द्वारा प्रोत्साहन –

देशव्यापी इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के विस्तार ने हिंदी को देश के कोने-कोने में आसानी से पहुँचा दिया है और उसकी व्यक्तिगत स्वीकार्यता को बढ़ाने का काम किया है। बालीवुड फिल्मों की बढ़ती हुई लोकप्रियता ने हिंदी को लोकप्रिय बनाने में एक महत्वपूर्ण योगदान किया है।

निष्कर्ष

हिंदी को राष्ट्रभाषा के स्वरूप में अपनाने के लिए जहाँ कई चुनौतियाँ हैं तो वहीं कई अच्छी संभावनायें भी हैं। जरूरत है कि हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ाया जाये इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाये जा सकते हैं - हिंदी ही एक ऐसी शालीन व समृद्ध भाषा है कि जिसका किसी भी क्षेत्रीय भाषा से विरोध नहीं है, बल्कि भारतीय भाषाएं एक दूसरे की बहने हैं। राष्ट्रीय महत्व के कामकाज यदि जनता की भाषा में होंगे तो देश की व्यवस्थाएं अधिक पारदर्शी होंगी। हिंदी भाषा हमारे माथे की बिन्दी स्वरूप है। इसी से ही जन जीवन में समरसता और संवाद में सहजता का प्रादुर्भाव होगा, दूरियाँ समाप्त होंगी तथा नजदीकियों को विस्तार मिलेगा।

जहाँ हम हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते हैं, वहीं हमें क्षेत्रीय भाषाओं को भी समान बढ़ावा देना चाहिए। यह एक चिंताजनक विषय है कि संविधान द्वारा अनुमोदित "त्रिभाषीय सूत्र" अधिकांश हिंदी भाषी राज्यों व अन्य राज्यों में ढंग से लागू नहीं किया जा रहा है। इसके लिये शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार कर त्रिभाषीय सूत्र को कड़े रूप से लागू करने की आवश्यकता है।

हिंदी को विज्ञान-तकनीकी, इंटरनेट के नये साधनों से प्रोत्साहित करने की जरूरत है। जिससे इसके उपयोग करने में युवा वर्ग को आगे लाया जा सके | "हिंगलिश " हिंदी एवं अंग्रेजी की मिश्रित भाषा अगर देवनागरी लिपि में उपयोग की जाये तो यह कोई बुराई नहीं बल्कि यह एक नये साहित्य एवं रचनात्मकता को जन्म देगी। "हिंगलिश"को एक तिरस्कार की दृष्टि से नहीं परंतु एक अवसर के रूप में देखना चाहिये जो हिंदी को सरल बनाती है, उसको उपयोगी बनाती है वहीं दूसरे ओर युवा वर्ग को आकर्षित भी करती है।

कोई भी भाषा स्थिर नहीं रह सकती है। निरंतर प्रगति एवं विकास ही भाषा को स्वस्थ एवं जीवित रखती है और उसके लिये अन्य भाषाओं, संस्कृतियों से आदान-प्रदान अत्यंत आवश्यक है। इसलिए हिंदी को अपने शब्दकोश को अंग्रेजी, कन्नड़, तमिल आदि क्षेत्रीय भाषाओं की सहायता से विस्तारित करना चाहिये जैसे आक्सफोर्ड का शब्दकोश लोकप्रिय लोक शब्दों को अपनाता है चाहे वह किसी भी भाषा के क्यों न हों। इससे हिंदी की कठिनता को कम करने व इसके प्रयोग को नये क्षेत्रों व भू-भागों में बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी।

अंततः हमें यह समझना चाहिये कि राष्ट्रभाषा लोगों पर थोपने से नहीं हो सकती बल्कि एक जन-आंदोलन के रूप में स्वयं ही उत्पन्न होनी चाहिये। अगर हम हिंदी को एक सरल, उपयोगी प्रगतिवादी, लोकप्रिय, लचीली एवं निरंतर अपने आपको एक नए कलेवर के रूप में गढ़ने वाली भाषा के रूप में ढाल सकें तो आशा है कि वह जल्द ही राष्ट्रभाषा के रूप में सभी को स्वीकार्य होगी। ❑

कोरोना महामारी के बाद की भारतीय सामाजिक और आर्थिक स्थिति

✍ **प्रणामी गोंहाई**
वरिष्ठ सहायक - 1
आंतरिक लेखा परीक्षा विभाग, दुलियाजान

कोरोना वायरस की वजह से लोगों के जेहन में जो खौफ, दहशत बैठ गया है, उससे बाहर निकलने में लोगों को थोड़े समय की जरूरत पड़ेगी।

कोरोना वायरस के कारण लोगों को एक दूसरे के साथ सामाजिक दूरियां बनानी पड़ी, उन्हें नकारात्मक सोच के साथ जीना पड़ा तथा अभी भी लोग डर के माहौल में जी रहे हैं। नकारात्मकता के कारण लोगों के सेहत पर असर पड़ा और कोरोना न होने के बावजूद डर के मारे बहुत सारे लोगों की मौत हो गई। इसलिए हमें अपने आपको पॉजिटिव सोच के साथ जोड़े रखना चाहिए। रचनात्मकता के साथ खुदको जोड़ें, किताबों से करें दोस्ती, मानसिक स्वस्थता के लिए रोजाना मेडिटेशन करें।

कोरोना महामारी के चलते बहुत सारे लोगों की नौकरी चली गई, बहुतों का काम-धंधा ठप पड़ गया। लोगों को भिक्षा मांगने की नौबत तक आ खड़ी हुई। रोजी-रोटी न होने की वजह से चिंता, बीमारी, पारिवारिक कलह जैसी समस्याओं से लोगों को जूझना पड़ा।

कोरोना वायरस का भारतीय अर्थनीति पर गहरा असर पड़ा है। इसकी वजह से भारत की जी.डी.पी. (Gross Development Product) में भी गिरावट आई।

कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते, लोगों के आने-जाने में जब से पाबंदियां लगी हैं, तबसे भारतीय पर्यटन उद्योग को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। इसके साथ विमान परिवहन उद्योग, रेल परिवहन उद्योग, बस परिवहन उद्योग को भी नुकसान का सामना करना पड़ रहा है।

कोरोना वायरस की वजह से बाहर से आगमन होनेवाले मरीजों की संख्या कम हो जाने के कारण देश की GDP में कमी आ रही है।

कोरोना महामारी के कारण उपभोक्ता की संख्या कम हो जाने के वजह से उत्पादकता में कमी देखने को मिल रही है। अर्थव्यवस्था को उन्नत करने के लिए उत्पादकता को बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिए कारोबार को सरकार द्वारा वित्तीय मदद की ज़रूरत है। मौद्रिक उत्प्रेरक और औद्योगिक नीतियों में भी परिवर्तन करना ज़रूरी है।

कृषि क्षेत्र में प्रवासी मजदूरों के अभाव से उत्पादन में कमी तथा परिवहन रोक के कारण खाद्य सामग्रियों की मूल्यवृद्धि की स्थिति आ खड़ी हुई। इससे आम जनता की आर्थिक स्थिति पर गहरा असर पड़ा। इसी तरह विभिन्न आर्थिक तथा सभी सामाजिक क्षेत्रों में कोरोना वायरस ने अपना प्रभाव विस्तार किया।

कोरोना वायरस अभी भी देश में दहशत फैला रहा है। हमें अब इसी के साथ जीने की आदत डालनी पड़ेगी और विकास की दौड़ में कदम बढ़ाने होंगे।

जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख

✍ **नयनमनी बरुआ**
कनिष्ठ सहायक - II
अनुसंधान एवं विकास विभाग, दुलियाजान

अकसर हम कई बार ऐसे लोगों के बीच आ जाते हैं जहाँ हम अच्छे और बुरे लोगों में फर्क नहीं समझ पाते, यह जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। ऐसे में कुछ बुरे लोग हमें भी अपने जैसा बनाने की कोशिश में रहते हैं और ऐसा करके उन्हें काफ़ी आनंद भी मिलता है।

ऐसे लोग न तो खुद आगे बढ़ते हैं और न किसी को आगे बढ़ने देते हैं।

अब अच्छे लोगों की क्या खासियत होती है वह जान लेते हैं।

अच्छे लोग आपको आगे बढ़ने की सलाह देने के साथ-साथ आपके प्रेरणा स्रोत्र भी बनते हैं। कई लोग अपने जीवन स्तर में काफी सुधार कर चुके होते हैं क्योंकि उनके साथ कुछ गतिविधियाँ थीं जो उन्हें कुछ अच्छे लोगों से सीखने को मिलीं।

अपने साधनों का सही उपयोग कहाँ और कैसे करना है ये वह भलीभांति समझ सकते हैं।

अकसर कई लोग उन लोगों के बीच बैठना पसंद करते हैं जो सिर्फ उनकी झूठी तारीफ करते हैं | लेकिन आप बस एक बार उनसे अपने लिए मदद की उम्मीद करके देखिएगा | आप खुद समझ जायेंगे की वे हमारे हितैषी है या नहीं।

नीम कड़वा जरूर होता है पर ज्यादातर बिमारीयों में नीम हकीम है। कुछ लोग नीम की तरह होते हैं । लेकिन वे ही आपके सच्चे

हितैषी भी होते हैं।
ऐसे लोगों से हमेशा आपको फायदा ही मिलता है क्योंकि उनको जब आपकी बुराई करनी होती है तो वे आपके पीठ पीछे नहीं बोलेंगे। बल्कि वे आपके सामने ही आपकी बुराई कर देंगे। उनकी बातें बिलकुल खरी होती हैं।
अब मैं बुरे लोगों की बात करूँ तो वे नकारात्मक पहलुओं को तुरंत पकड़ते हैं और जब हम उनके साथ रहना शुरू करते हैं तो हमारे अन्दर भी वे ही नकारात्मक भाव पनपने लगते हैं।
हमारी सोच भी उन्हीं के जैसी होने लगती है। क्योंकि एक दूसरे से घुलने-मिलने के लिए हमें भी उनके जैसा ही बनना पड़ जाता है। ये मानव की प्रकृति है की वह नकारात्मकता की ओर जल्दी ही आकर्षित हो जाता है। जिसका प्रभाव उन्हें तब दिखाई पड़ता है जब कोई उनकी आशाओं को रौंदकर उनसे आगे निकल जाता है। कई बार तो इतनी देर हो चुकी होती है कि लगाम हाथ से पूरी तरह निकल जाता है। जो लोग मीठा बोलते हैं आपको उनसे सतर्क रहने की ज़रूरत है। हो सकता है की वे आपके हितैषी न हो । मैं यह नहीं कहता की सभी लोग एक जैसे ही होते हैं। कुछ लोग आपकी परवाह करने वाले भी होंगे।
अच्छे लोग कभी भी अच्छा होने का दिखावा नहीं करते हैं, वे हमेशा दिखाते हैं कि वे कौन हैं, उन्हें परवाह नहीं है कि दूसरे उनके बारे में क्या सोचते हैं, वे केवल परवाह करते हैं, उनकी कंपनी में हर किसी को बढ़ना चाहिए, हर चीज सही जगह प्राप्त करती है। लेकिन बुरे लोग हमेशा अपने निजी लाभ के इरादे से चलते हैं, वे कभी दूसरों की परवाह नहीं करते हैं। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते हमें हमेशा यह पता लगाना होता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। इसी तरह यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को बेहतर भविष्य के लिए मार्गदर्शन करें। यह जीवन अनमोल है और इसे एक बड़े उद्देश्य के लिए उपयोग करें।
इसी उम्मीद कि साथ की आपको मेरे इस लेख से कुछ सीखने को यदि मिला हो तो। आप अपनी प्रतिक्रिया ज़रूर देंगे। जय हिन्द !

पाठ-गर्दन (Text Neck)

✍ **अमित राठी**
फिजियोथेरपिस्ट
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

'टेक्स्ट नेक' एक ऐसा शब्द है जो लंबे समय तक आगे झुककर बनने वाली मुद्रा का वर्णन करने के लिए गढ़ा गया है। उदाहरण के लिए जब पढ़ते और टेक्स्टिंग करते समय सेल फोन देखते हैं, तो तनाव की चोटों का कारण बनता है। इस आसन के परिणामस्वरूप अक्सर सिरदर्द और थोरैसिक हाइपरकीफोसिस, ग्रीवा और कंधे में दर्द होता है।

यह स्थिति दुनिया भर में मोबाइल उपयोगकर्ता आबादी में निरंतर वृद्धि के साथ बढ़ती जीवन शैली और स्वास्थ्य की स्थिति है। यह विशेष रूप से बच्चों में मोबाइल फोन के उपयोग की अधिक प्रवृत्ति को देखते हुए बढ़ती चिंता का कारण है।

टेक्स्ट नेक के लक्षण

टेक्स्ट नेक की सबसे आम प्रस्तुति गर्दन में दर्द, जकड़न और खराश है। मुख्य लक्षणों में गर्दन में अकड़न, खराश और गर्दन को हिलाने में कठिनाई आमतौर पर तब होती है जब लंबे समय तक उपयोग के बाद गर्दन को हिलाने की कोशिश की जाती है।

- दर्द: एक स्थान पर स्थानीयकृत किया जा सकता है या एक क्षेत्र में फैल सकता है, आमतौर पर गर्दन के निचले हिस्से में। सुस्त दर्द के रूप में वर्णित किया जा सकता है या चरम

मामलों में तेज या छुरा भी हो सकता है
- विकिरण दर्द: अक्सर कंधे और बाहों में दर्द का विकिरण हो सकता है।
- मांसपेशियों में कमजोरी: कंधे की मांसपेशियां जैसे ट्रेपेज़ियस, रॉमबॉइड और कंधे के बाहरी रोटेटर अक्सर कमजोर होते हैं

- सिरदर्द: उप-पश्चकपाल (Sub Occipital) मांसपेशियों की जकड़न से तनाव प्रकार का सिरदर्द हो सकता है।

इन सामान्य लक्षणों के अलावा ये भी हो सकते हैं:

- थोरैसिक किफोसिस का चपटा होना
- प्रारंभिक शुरुआत गठिया
- रीढ़ की हड्डी का अध: पतन (degeneration)
- डिस्क संपीड़न (Compression)
- मांसपेशी में कमज़ोरी
- फेफड़ों की क्षमता का नुकसान

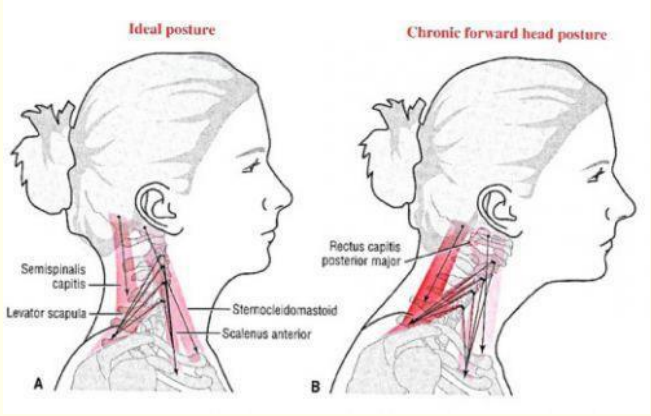

प्रबंध

जब टेक्स्ट नेक की बात आती है तो रोकथाम महत्वपूर्ण है। स्मार्टफोन या अन्य हाथ से पकड़े जाने वाले उपकरणों का उपयोग करते समय टेक्स्ट नेक की व्यवस्थित समीक्षा से निम्नलिखित **सिफारिशों को ध्यान में रखा जाना चाहिए:**

- अत्यधिक उपयोग से बचें और बार-बार ब्रेक लें।
- लंबे समय तक स्थिर मुद्रा से बचें।
- डिवाइस को इस तरह रखें कि यह सिर/गर्दन और ऊपरी छोरों दोनों पर तनाव कम करे।
- लंबे समय तक टाइपिंग या स्वाइप करने जैसे गतिविधियों की उच्च पुनरावृत्ति से बचें।
- लंबे समय तक एक हाथ में बड़े या भारी उपकरण रखने से बचें।

फिजियोथेरेपी

टेक्स्ट नेक से उत्पन्न तनाव की चोट के इलाज में फिजियोथेरेपी बहुत प्रभावी पाई गई है। फिजियोथेरेपी को 2-4 सप्ताह के कार्यक्रम के रूप में तैयार किया जा सकता है, जो नरम ऊतक जुटाना, ग्रेड 1 और 2 संयुक्त गतिशीलता, तंग मांसपेशियों के सक्रिय और निष्क्रिय हिस्सों और मांसपेशियों को मजबूत बनाने, मुद्रा पुनर्प्रशिक्षण और घरेलू व्यायाम कार्यक्रम के साथ शुरू होता है। ❑

'केक कटिंग'

✍**डॉ. रंजन कुमार भागवती**
मुख्य अनुसंधान वैज्ञानिक
अनुसंधान और विकास विभाग, दुलियाजान

दुनिया के महान सिनेमा अभिनेताओं में से एक, हमारे अपने अमिताभ बच्चन जी ने 2016 में अपना 74वां जन्मदिन मनाते हुए पूछा :

" ये केक क्यों ? ये मोमबत्ती क्यों ? ये फुंक कर बुझाना क्यों ?"

अमिताभ जी अपना जन्मदिन उस साधारण तरीके से मनाना चाहते थे जिसे वे बचपन से जानते थे। उन्होंने सोचा कि क्या भारतीय स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी हमें अपने शुभ अवसरों को मनाते हुए कुछ औपनिवेशिक हैंगओवर का पालन करने की आवश्यकता है? विभिन्न लोगों ने केक और समारोहों के बारे में उनके सवालों पर टिप्पणी की। केक और केक काटने की रस्में अब हमारे समारोहों का एक अभिन्न अंग हैं और हमारे सामूहिक मानस का एक अविभाज्य हिस्सा बन गए हैं। हाल के वैश्विक संघर्षों ने युद्ध में कई नए आयाम जोड़े हैं। एक आधुनिक सेना में 'एम्बेडेड जर्नलिस्ट/प्रेस' होने की अवधारणा सबसे अलग है। ये पत्रकार लगभग वास्तविक समय में एक प्रगतिशील युद्ध के घटनाक्रम की रिपोर्ट करते हैं। ज्यादातर समय मार्चिंग सेनाओं के आख्यानों के साथ तालमेल बिठाते हुए। वे कभी-कभी रिपोर्टिंग के अपने उत्साह में विरोधियों को अपनी सेना की अपर्याप्तता का भी खुलासा करते हैं। इन 'एम्बेडेड पत्रकारों' ने अब हमारे लिविंग रूम में संघर्ष ला दिया है। युद्ध की लाइव स्ट्रीमिंग। जैसे कि यह एक फिल्म थी। ज्यादातर समय इन एम्बेडेड 'सुपरहीरो' के सौजन्य से होती है। इसी

तरह, औपचारिक केक काटने से अब खुद को भारतीय त्योहार परिदृश्य में शामिल कर लिया है। ये विकास भले ही अच्छे के लिए हो रहे हों, लेकिन इनका प्रभाव समय के साथ स्पष्ट होता जाएगा। केक पर अमिताभ जी की टिप्पणियों ने मुझे भारत में केक काटने के समारोह और केक क्रांति के कुछ दिलचस्प पहलुओं की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया। आइए हम इनमें से कुछ पहलुओं पर ध्यान दें :

भारत में केक संस्कृति की शुरुआत

25 दिसंबर, 1955 को, टाइम्स ऑफ इंडिया अखबार ने बताया कि भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद उस दिन एक विशेष, 40 पाउंड का क्रिसमस केक काटेंगे: "केक और मिठाई कर्मचारियों और उनके बच्चों के बीच वितरित की जाएगी। उस समय औपचारिक संदर्भ में केक का यह अपेक्षाकृत दुर्लभ उल्लेख था। ब्रिटिश केक की अवधारणा लेकर आए, लेकिन नुस्खा घटकों के साथ संघर्ष किया। उन दिनों मुख्य चुनौतियाँ थीं, 'ओवन', महीन आटे की दुर्लभता और ठीक से धुला हुआ मक्खन। यीस्ट की आवश्यकता थी क्योंकि 19वीं शताब्दी के मध्य तक बेकिंग पाउडर का आविष्कार होने तक घर में पके हुए केक अनिवार्य रूप से मीठे ब्रेड थे। केक के लिए बेकिंग पाउडर का उपयोग अमेरिका में लोकप्रिय था और केक पर बड़े चयन के साथ पहली भारतीय कुकबुक में से एक लंढौर कम्युनिटी कुकबुक है, जो मसूरी के पास हिल स्टेशन पर अपने भारतीय मुख्यालय में अमेरिकी मिशनरियों द्वारा एकत्र किए गए व्यंजनों से बनी है। हिल स्टेशन अपने दूध उत्पादों के लिए भी जाने जाते थे, जिसमें अच्छे केक के लिए आवश्यक मक्खन भी शामिल था। फ्रूट केक 'टीटाइम' पसंदीदा के रूप में लोकप्रिय हो गया। भारतीय सामग्री केक व्यंजनों में प्रवेश करने लगी, जैसे 'पेठा' (कैंडी राख-लौकी) जो आगरा और अजमेर जैसी जगहों की विशेषता है। यह कई पुराने भारतीय क्रिसमस केक व्यंजनों में एक प्रमुख घटक है। यूरोप के पेशेवर केक निर्माताओं द्वारा ब्रिटिश भारत के बड़े शहरों में सफल बेकरी स्थापित की गई। वे ज्यादातर इटली और स्विट्ज़रलैंड से थे, दोनों जगहों ने अपने बड़े पर्यटक व्यापार को पूरा करने के लिए पेटीसरी और फैंसी बेकिंग की पर्याप्त संस्कृतियां विकसित की थीं। उदाहरण के लिए, 1927 में, एक स्विस जोड़े, जोसेफ और फ्रीडा फ्लूरी ने कलकत्ता में उनके नाम पर केक की दुकान स्थापित की। Flury's अपने कैफे में उपलब्ध कराए गए केक और मांग पर बनाए गए विस्तृत मिश्रण दोनों के लिए जाना जाता है।

केक काटने के समारोह की ऐतिहासिक उत्पत्ति

केक कटिंग को डिक्शनरी में 'केक काटने की क्रिया या क्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है, विशेष रूप से एक शादी या अन्य उत्सव समारोह में एक प्रथागत अनुष्ठान के रूप में'। शास्त्रीय रोमन संस्कृति के अनुसार, एक विशेष जन्मदिन या शादी समारोह के अवसर पर, केक को कभी-कभी सद्भावना के रूप में परोसा जाता था। इन केक को मेवे और आटे के उपयोग से चपटे घेरे में बनाया जाता था, जिन्हें शहद से मीठा किया जाता था । 15वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, जर्मनी में बेकरियों ने अपने ग्राहकों के लिए जन्मदिन के लिए एक-परत केक की शुरुआत और विपणन करके एक नई परंपरा बनाई। इस तरह एक आधुनिक जन्मदिन केक का जन्म हुआ। यह परंपरा काफी समय तक चली और फिर बाद में 17वीं शताब्दी में समकालीन जन्मदिन केक पेश किए गए। ये बर्थडे केक बहुस्तरीय, आइसिंग और अन्य सजावट जैसे विस्तृत रूप और डिज़ाइन में आए, जिसने इन जन्मदिन केक को और अधिक ताज़ा रूप दिया। लेकिन दुख की बात है कि ये केक समाज के केवल अमीर वर्ग के लिए ही उपलब्ध थे। औद्योगिक क्रांति के बाद, केक के उत्पादन के लिए आवश्यक सामग्री की प्रचुरता के कारण, ये जन्मदिन के केक निम्न वर्ग के लिए भी सुलभ हो गए। पश्चिमी यूरोपीय देशों ने 19वीं शताब्दी के मध्य में अपने जन्मदिन समारोह के एक भाग के रूप में जन्मदिन के केक की शुरुआत की, जो प्राचीन रोमन संस्कृति का परिणाम था।

एक परंपरा के रूप में जन्मदिन का केक आने के साथ, केक पर मोमबत्तियां भी आईं। कई सिद्धांत हैं, जो मोमबत्तियों के अनुष्ठान की उत्पत्ति और महत्व को समझाने की कोशिश करते हैं। ग्रीक मूल की कहानी के अनुसार, एक सिद्धांत है जो बताता है कि जन्मदिन के केक पर मोमबत्तियां रखने की परंपरा प्राचीन यूनानियों से जुड़ी है। प्रारंभिक यूनानियों में प्रत्येक चंद्र मास के छठे दिन देवी आर्टेमिस के जन्म का सम्मान करने के लिए मोमबत्तियां जलाने की परंपरा थी। हालाँकि, पगानों की अपनी अलग-अलग मान्यताएँ हैं। उनकी मान्यता के अनुसार, एक अनुष्ठान के रूप में आग का उपयोग वेदियों के निर्माण के समय से होता है। इन जन्मदिन मोमबत्तियों में एक प्रतीकात्मक शक्ति होती है। इतिहास में, यह माना जाता था कि आत्माएं अपने जन्मदिन पर लोगों के पास जाती हैं और इसलिए परिवार के सदस्य और दोस्त जन्मदिन के व्यक्ति

को घेर लेते हैं, व्यक्ति को आनंदित करते हैं, और उसे आसपास की बुरी आत्मा से बचाते हैं। वे आत्मा को दूर भगाने के लिए शोर भी करते हैं। केक पर मोमबत्तियों का इतिहास 18 वीं शताब्दी से जर्मन बच्चों के जन्मदिन समारोह से भी पता लगाया जा सकता है, जिसे 'किंडरफेस्ट' भी कहा जाता है। इन समारोहों में केक पर मोमबत्तियां भी होती हैं जो आसपास छिपी हुई बुरी आत्माओं से लड़ने के लिए होती हैं। उस समय, लोग उपहार नहीं लाते थे, बल्कि वे केवल जन्मदिन के लिए शुभकामनाएं लाते थे। हालांकि, अगर कोई मेहमान साथ में उपहार लाता है, तो यह एक अच्छे शगुन का प्रतीक होगा। बाद में, लोग जन्मदिन के उपहार के रूप में फूल लाने लगे। मोमबत्तियां फूंकने की परंपरा का एक और उदाहरण 1881 में स्विट्जरलैंड में दर्ज किया गया था। स्विट्जरलैंड के प्रमुख समाचार पत्र के शोधकर्ताओं ने स्विस मध्यम वर्ग के विभिन्न अंधविश्वासों को दर्ज किया। जिनमें से एक यह है कि वे मानते हैं कि जीवन के प्रत्येक वर्ष के अनुरूप केक पर मोमबत्तियों की संख्या समान होती है। इन मोमबत्तियों को उस व्यक्ति द्वारा बुझाया जाना था जिसका जन्मदिन मनाया जा रहा था। विभिन्न देशों के इन सभी सिद्धांतों के मेल के साथ, जन्मदिन के केक पर मोमबत्तियां जलाने की प्रथा अस्तित्व में आई। कई संस्कृतियों में, यह भी माना जाता है कि मोमबत्तियों को फूंकने से पहले जन्मदिन का व्यक्ति एक इच्छा करता है।

जन्मदिन मनाने का पारंपरिक भारतीय तरीका

किसी के जन्मदिन का स्वागत करने का पारंपरिक भारतीय तरीका कुछ अलग और अनोखा है और अभी भी देश के कई हिस्सों में इसका पालन किया जाता है। एक पारंपरिक जन्मदिन की सुबह मंदिर की यात्रा के साथ शुरू होती है। यहां मौजूद लगभग सभी संस्कृतियां और धर्म जन्मदिन समारोह के एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुष्ठान के रूप में सर्वशक्तिमान से आशीर्वाद लेने में विश्वास करते हैं। यह सामूहिक भारतीय संस्कृति की एक उल्लेखनीय विशेषता है। किसी के जन्मदिन या किसी कार्यक्रम को मनाने के पारंपरिक भारतीय तरीके का दूसरा पहलू इस अवसर पर नए कपड़ों के अलंकरण से संबंधित है। उत्सव के पारंपरिक भारतीय तरीके की तीसरी दिलचस्प विशेषता कम भाग्यशाली लोगों को जन्मदिन पर भोजन देना है। पारंपरिक जन्मदिन समारोहों में जरूरतमंद और गरीबों को भोजन, कपड़े या पैसा देना आम बात है। आमतौर पर यह मंदिरों के बाहर खाना बांटने या घरेलू सहायिकाओं को पैसे देने के लिए किया जाता है। एक अनाथालय या आश्रय में जाना और रहने वालों के साथ समय बिताना एक और तरीका है। गहराई से सोचने पर, यह माना जा सकता है कि हमारे बड़ों ने हमें यह सिखाने की कोशिश की, कि जब हम देने की कोशिश करते हैं, तो जन्मदिन अधिक संतोषजनक होता है। साथ ही, कम भाग्यशाली लोगों के साथ खुशी बांटने का विचार, बढ़ते अहंकार पर नियंत्रण रखने का एक शानदार तरीका है। यह हमें आज के समय में यह भी याद दिलाता है कि, ऐसे अवसर पर जब आप दुनिया के शीर्ष पर महसूस करते हैं, उस भावना को बनाए रखने और बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है कि किसी दूसरे व्यक्ति की मदद करके उसके दिन को बेहतर बनाया जाए। कुछ संस्कृतियों में, जैसे कि पारसी समुदाय में किसी के जन्मदिन पर पेड़ लगाना बेहद शुभ माना जाता है। हमारे पारंपरिक तरीकों और आधुनिक तरीकों के बीच कई सूक्ष्म अंतर सामने आते हैं। सरल उदहारण के तौर पर, जैसे जन्मदिन के केक पर मोमबत्तियां फूंकने के बजाय किसी के जन्मदिन पर दीया जलाना। ऐसा माना जाता है कि प्रकाश को बुझाने का अर्थ है जीवन को कम करना और सफलता को कम करना होता है। एक ओर जहां चाकू से केक काटे जाते हैं, कई पारंपरिक धर्म और संस्कृतियां जन्मदिन मनाने के लिए किसी नुकीली चीज का इस्तेमाल करने के विचार के खिलाफ हैं। आश्चर्यजनक रूप से, पारंपरिक उत्सव आध्यात्मिक, दार्शनिक और आत्मा-उत्तेजक क्षणों को महत्व देते हैं। यह परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने को भी प्रोत्साहित करता है। हम सभी जानते हैं कि जैसे-जैसे हम बड़े हो रहे थे, वैसे-वैसे हमारे हर जन्मदिन पर कोई पार्टी नहीं होती थी। हमारी माँ और दादी रसोई में, हमारे लिए भव्य भोजन बनाने के लिए, अंतहीन परिश्रम करती थीं। शाम को होने वाली भव्य पार्टी के लिए पूरा घर सुबह से काम कर रहा होता था। कुल मिलाकर, पारंपरिक जन्मदिन समारोह आधुनिक समय की पार्टियों से कम उत्सवपूर्ण नहीं हैं।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि 'केक कटिंग' अब किसी के जन्मदिन या एक ऐतिहासिक घटना को मनाने के भारतीय तरीके से एकीकृत हो गया है। विभिन्न अनुष्ठानों को स्वीकार करने और फिर भी भारतीय संस्कृति के मूल मूल्यों और विशिष्टता को बनाए रखने की क्षमता एक ऐसी चीज है जो मुझे विश्वास है कि हमारी आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। ' वसुधैव कुटुम्बकम् ' हैप्पी केक कटिंग !! ❑

नारी-मुक्ति

✍ **माधुरी किशोर**
आश्रित - मनीष कुमार
उप महाप्रबंधक, तैलाशय एवं उपसतह प्रबंधक
पूर्वी परिसंपत्ति, दुलियाजान

अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता से ही भारतीय नारी के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

भारत में हर देशवासी को अपने विचार व्यक्त करने की आजादी है। विचार व्यक्त करने का जो भी माध्यम लोग पाते हैं अपने विचार व्यक्त करते हैं ट्विटर, फेसबुक इत्यादि। अगर भारतीय नारी को भी विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिल जाए तो वह भी अपने अंदर उठ रहे ढेरों सवालों को व्यक्त कर सकती है। नारी तो समय के साथ बदलती है, कभी मां के रूप में तो कभी बहन कभी पत्नी और कभी बेटी के रूप में। फिर हम माँ, बहन, बेटी और पत्नी के साथ ऐसा भेदभाव क्यों?

सीता, अनसूया, सावित्री, गायत्री आदि महिलाओं का नाम आज भी बहुत ही ज्यादा सम्मान के साथ लिया जाता है। नारी को देवी के रूप में माना जाता है। उस समय पूजा से लेकर प्रत्येक कार्य में नारी की उपस्थिति को आवश्यक माना जाता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है अब तो हमारे समाज में लड़के और लड़कियों में जन्म से ही भेदभाव किया जाता है। यह भेदभाव सबसे बड़ा कारण है नारी के पिछड़ेपन का। हर मामले में योग्य होने के बावजूद भी पीछे होना पड़ता है क्योंकि वह नारी है। एक ही मां से जन्मे लड़का लड़की में इतना अंतर क्यों?

भेदभाव को खत्म करने का कोई संविधान क्यों नहीं है, अगर बहुत से घर में भेदभाव नहीं भी किया जाता है तब वहां लड़कियां घर के बाहर सुरक्षित नहीं है। आए दिन लड़कियों के साथ छेड़छाड़, बलात्कार, मारपीट, घरेलू हिंसा, आदि बातें सुनने को मिलती हैं| क्या यह समाज और सरकार की जिम्मेदारी नहीं है कि सब मिलकर एक मजबूत पहल करें, ताकि छेड़छाड़ और बलात्कार के नाम से ही हर मर्द की रूह कांप उठे। हर मां-बाप छेड़छाड़ के नाम से इतने डर गए हैं कि नारी को जन्म से पहले ही गर्भ में मार दिया जाता है। यह सोच कर कि हमारी लड़कियां देश और समाज में सुरक्षित नहीं है, फिर उसको जन्म देने से क्या फायदा। अधिकांश परिवारों में लड़कों को आराम से ही जीने की स्वतंत्रता मिलती है वहीं हम लड़कियों को ज्यादा बोलने, ज्यादा हंसने, ज्यादा घूमने, यहां तक कि ज्यादा पढ़ाई लिखाई की भी स्वतंत्रता नहीं होती है। ऐसे में लड़कियों में हीन भावना पैदा हो जाती है और लड़कियों को कमजोर बना देती है। इससे लड़कों को इन पर हावी होने का मौका मिल जाता है। जिसके कारण लड़कियां अत्याचार सहती रहती हैं।

सबसे जरूरी है कि, हमारा समाज अपनी सोच को बदले। जहां कानून सिर्फ पन्नों में रह जाते हैं या समय पर साथ नहीं देते या उचित न्याय नहीं देते तो हम अपने आप पर भरोसा कर अपने आप न्याय करें, अगर स्वयं के घर में कोई अपराधी है तो उसे बचाए या छिपाए नहीं बल्कि कानून के हवाले करें, अगर अपने आसपास समाज में किसी को भी न्याय की जरूरत हो तो उसके साथ खड़ा होकर न्याय का साथ दें। अपराधी को सजा भी सरेआम दि जाए जिससे कोई भी जुर्म करने की जुर्रत न करें। हर घर में बेटे और बेटियों को सही शिक्षा और संस्कार दें, विशेष तौर पर बेटों को स्त्रियों का सम्मान करना सिखाएँ। बेटा और बेटी दोनों को स्वतंत्रता और स्वच्छंदता का अंतर अच्छी तरह समझाएं। उन्हें प्यार दें पर अनुशासन में भी रखें। रिश्तों की गरिमा के साथ ही उनसे ऐसा संबंध रखें कि वे अपनी सारी बातें साझा करें। उचित शिक्षा प्यार और विश्वास की कमी ही किसी को गलत राह पर ले जाती हैं। कानून की दृष्टि में हम स्त्रियों को पूर्ण समानता मिल चुकी है लेकिन वास्तविकता में अभी भी बहुत अंतर है। भारत की ग्रामीण स्त्रियों की स्थिति अभी भी अच्छी नहीं है। ग्रामीण स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए अभी भी देश और समाज को काफी मेहनत करनी पड़ेगी। बिना मेहनत के अभी भी नारी का सशक्तिकरण संभव नहीं है। शहरों में तो कुछ स्त्रियां स्वच्छंद हो गई हैं। सफलता का मार्ग अपने देश की सभ्यता और संस्कृति का भेंट चढ़ा कर किसी के हित में नहीं है, न स्वयं और न आम स्त्रियों के बल्कि ऐसा करके वह आम स्त्रियों की स्थिति को बदतर बना रही है। अपने देश की मर्यादाओं को ध्यान में रखकर प्रगतिशील होना ही हितकर है। स्त्रियों की भागीदारी से देश का आर्थिक विकास तेजी से बढ़ जाता है। इसके साथ ही स्त्री शिक्षित रहेगी तो घरेलू हिंसा व सामाजिक अत्याचार का शिकार होने से नियंत्रण पा सकेंगी। शिक्षा के कारण ही वह स्वयं के अधिकारों को सुरक्षित करती है और स्वयं को सक्षम बनाती है। एक स्त्री शिक्षित होती है तो वह शिक्षा का उपयोग अपने पूरे परिवार को साक्षर बनाने या उसके हित के लिए करती है| संतान की पहली गुरु उसकी मां होती है। अतः स्त्री की शिक्षा का असर स्वयं के साथ-साथ परिवार समाज व देश की पीढ़ी पर पड़ेगा| स्त्री शिक्षित होगी तो देश के विकास में संपूर्ण महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। नारी की स्वतंत्रता और शिक्षा से काफी हद तक नारी की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। हम स्त्रियां समाज और देश में नया बदलाव ला सकती हैं। ❑

भूजल की कमी को संबोधित करना: सीखने के लिए सबक

✍सारंग बरुआ
कनिष्ठ अभियंता - 1(यांत्रिक)
परियोजना विभाग, दुलियाजान

"पानी" सबसे मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन है जो पूरे ग्रह में मुफ्त और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। लेकिन जब पीने योग्य पानी की बात आती है तो मार्जिन कम से कम हो जाता है। पृथ्वी की सतह के 70% हिस्से पर कब्जा करने वाले पानी में से केवल 3% को ही मीठे पानी के रूप में माना जाता है। इस मीठे पानी के अधिकांश संसाधन मनुष्यों के लिए दुर्गम हैं - ध्रुवीय टोपी के अंदर बंद हैं या पृथ्वी के नीचे बहुत गहरे हैं जिन्हें निकाला नहीं जा सकता है। इसके अलावा बढ़ते प्रदूषण ने सुलभ मीठे पानी के अधिकांश हिस्से को अत्यधिक प्रदूषित करने में कामयाबी हासिल की है। यह पृथ्वी के केवल 0.4% पानी को छोड़ देता है जो कि इसके 7 अरब निवासियों के बीच साझा करने योग्य और पीने योग्य है। इसलिए, बढ़ते प्रदूषण और जनसंख्या के साथ यह मात्रा दिन-ब-दिन घटती जा रही है। इस मुद्दे के बारे में जागरूकता की आवश्यकता आज की दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकांश आबादी अनजान है।

अब, अगर हम भारत में इस स्थिति को देखें, तो भारत दुनिया की 16% आबादी का घर है, लेकिन दुनिया के मीठे पानी के संसाधनों का केवल 4% ही रखता है। भारत में न केवल भूजल दुर्लभ है, बल्कि दशकों से भूजल का दोहन बढ़ रहा है। पिछले 50 वर्षों में, बोरवेल (Borewell) की संख्या 1 से 20 मिलियन तक बढ़ी है, जिससे भारत भूजल का दुनिया का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता बन गया है।

"सेंट्रल ग्राउंडवाटर बोर्ड ऑफ इंडिया" (CGBI) का अनुमान है कि लगभग 17% भूजल ब्लॉकों (Block)का अत्यधिक दोहन किया जाता है (जिसका अर्थ है कि जिस दर पर पानी निकाला जाता है वह उस दर से अधिक होता है जिस पर जलभृत प्राकृतिक रूप से रिचार्ज करने में सक्षम होता है) जबकि क्रमशः 5% और 14% महत्वपूर्ण हैं और अर्ध-महत्वपूर्ण चरण हैं । वर्तमान अति-शोषण दर आजीविका, खाद्य सुरक्षा, जलवायु-चालित प्रवास, सतत गरीबी में कमी और शहरी विकास के लिए खतरा है।

भूजल के घटने के मुख्य कारण? :

जमीन से पानी की बार-बार पंपिंग(Pumping): जैसा कि कहा जाता है कि बोरवेल से पंपों या किसी भी तरह से पानी का उपयोग करने से जलभृत को कम करने में मदद मिल रही है और दिन-प्रतिदिन बढ़ती आबादी के साथ यह दर केवल बढ़ रही है।

कृषि उपयोग: अरबों लोगों की जीवन शैली की जरूरतों के लिए भूजल का उपयोग करने के साथ-साथ भूजल का दूसरा बड़ा हिस्सा खेती में चला जाता है। भारत में यह व्यापक रूप से देखा जाता है कि खेती के दौरान पानी की बर्बादी प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट है कि इसे कब नियंत्रित किया जाना चाहिए। शिक्षा और जागरूकता की कमी खेती में इस अपव्यय प्रक्रिया को बढ़ाती है।

प्राकृतिक कारक: कभी-कभी अनिश्चित और सीमित वर्षा जैसे प्राकृतिक कारक जलभृतों(Aquifer) के धीमे पुनर्भरण में योगदान करते हैं। लेकिन फिर हम कह सकते हैं कि कहीं न कहीं हम इन कम वर्षा और जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

यह हमें कैसे प्रभावित करेगा? :

भूजल की कमी के कारण हमारे पास पृथ्वी के भीतर गहराई तक पंप करने का विकल्प होगा। इसके परिणामस्वरूप उन जल भंडारों तक पहुँचने के लिए ऊर्जा संसाधन, अधिक समय और ऊर्जा का अधिक उपयोग होगा। लागत भी अनिश्चित काल के लिए बढ़ जाएगी।

बड़े जल निकाय अधिक उथले हो जाएंगे: जैसे-जैसे कमी बढ़ेगी, कम पानी प्रवेश करेगा क्योंकि मौजूदा सतही पानी का वाष्पीकरण जारी है। उथले जल निकाय मछली और वन्य जीवन सहित किसी क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र को गहराई से प्रभावित करेंगे।

अन्य प्रभाव: बड़े जलभृतों के कारण खाद्य आपूर्ति समाप्त हो जाएगी और लोगों को नुकसान होगा। यह अर्थव्यवस्था और भलाई के लिए एक बड़ी हड़ताल होगी। सूची जलवायु परिवर्तन, अकाल के विस्फोट, जैसे-जैसे घटती जाती है, वैसे-वैसे बढ़ती जाती है।

क्या कर रही है सरकार? :

इस बढ़ती समस्या का मुकाबला करने के लिए, सरकार जागरूकता फैलाने के लिए अभियान और योजनाएँ चला रही है। इनमें से कुछ हैं : –

जल शक्ति अभियान (2019): भारत में 256 जिलों के पानी की कमी वाले ब्लॉकों में भूजल की स्थिति सहित पानी की उपलब्धता में सुधार के दृष्टिकोण के साथ एक समयबद्ध अभियान।

जल शक्ति अभियान: कैच द रेन: वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए एक पहल।

अटल भूजल योजना : सामुदायिक भागीदारी के साथ भूजल संसाधनों का सतत प्रबंधन 81 जल संकटग्रस्त जिलों और सात राज्यों की 8774 ग्राम पंचायतों में लागू किया गया। गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश।

राष्ट्रीय जलभृत मानचित्रण और प्रबंधन कार्यक्रम (NAQUIM): देश में भूजल संसाधनों के सतत प्रबंधन की सुविधा के लिए जलभृतों का मानचित्रण, जलभृत प्रबंधन योजनाओं का लक्षण वर्णन और विकास।

भूजल के कृत्रिम पुनर्भरण के लिए मास्टर प्लान (2020): राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के परामर्श से केंद्रीय भूजल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) द्वारा तैयार कृत्रिम पुनर्भरण के लिए एक मैक्रो स्तरीय योजना।

राज्य की पहल: राजस्थान में "मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान", "महाराष्ट्र में जलयुक्त शिबर", गुजरात में "सुजलम सुफलाम अभियान", "मिशन काकतीय: तेलंगाना में। बिहार में "जल जीवन हरियाली", आंध्र प्रदेश में "नीरू चेट्टू" आदि।

हम क्या कर सकते हैं? :

सरकार के अलावा, वह दिन आ गया है कि हम सरकारी योजनाओं में अपना हाथ दें और जागरूक बनें और इस संकट में अपना योगदान दें। भूजल को संरक्षित करने के लिए हम यहां क्या कर सकते हैं:

देशी(Native) हो जाओ: अपने परिदृश्य में देशी पौधों का प्रयोग करें। उन्हें ज्यादा पानी या उर्वरक की जरूरत नहीं है। प्राकृतिक फसलों या पौधों का उत्पादन क्षेत्रीय जलवायु और मिट्टी और पानी की खपत के समायोजन के वर्षों से होता है।

रासायनिक उपयोग कम करें: घर और कृषि-खेतों के आसपास कम रसायनों का प्रयोग करें और उन्हें ठीक से निपटाने का ध्यान रखें। उन उत्पादों के कारण होने वाले प्रदूषण को कम करें।

अपशिष्ट प्रबंधन: पर्यावरण के लिए संभावित जहरीले पदार्थों का उचित निपटान।

इसे चलने न दें: अत्यधिक पानी के उपयोग की प्रथा को रोकना चाहिए। जरूरत पड़ने पर ही पानी का इस्तेमाल करें और इसे बिना इस्तेमाल के न चलने दें। विलासिता के उद्देश्य के लिए कम पानी का प्रयोग करें।

ड्रिप(Drip) को ठीक करें: अपने घर के आसपास खराब नल, जुड़नार, नल और पानी की बर्बादी को बढ़ावा देने वाली किसी भी चीज की जांच करें। साथ ही जागरूकता फैलाएं और दूसरों को भी पानी बर्बाद करने से रोकें।

कम करें, पुन: उपयोग करें और रीसायकल करें(Reduce, Reuse & Recycle): इस अभ्यास का उपयोग किसी भी सामग्री में किया जाना चाहिए जिसका उपयोग हम अपने दैनिक उपयोग में कचरे को कम करने के लिए करते हैं।

पानी के प्राकृतिक वैकल्पिक स्रोतों को खोजना सीखें: भूजल के उपयोग के अलावा, अन्य स्रोतों से पानी ढूंढना और उसका उपयोग करना सीखें (जैसे वर्षा जल संचयन)। यह एक्वीफर्स/जलवाही स्तर (aquifers) को अपने संसाधन को फिर से भरने के लिए समय देगा।

भूजल की पंपिंग को विनियमित करें: केवल बोरवेल के पानी का उपयोग करें या पानी की बर्बादी को कम करने के लिए विनियमित तरीके से पंप करें।

सिंचाई के लिए पानी बचाने वाली तकनीकों को अपनाना: ड्रिप इरिगेशन(Drip irrigation) और माइक्रो स्प्रिंकलर(Micro sprinkler) पानी के स्प्रे त्रिज्या को कम किए बिना पानी की मात्रा को कम करने के लिए वातित जल स्प्रे का उपयोग कर सकते हैं। इसलिए सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों को अपनाने से भूजल के भारी उपयोग को बचाया जा सकता है।

जानें और अधिक सांझा करें: जल शिक्षा में शामिल हों। भूजल के बारे में अधिक जानें और अपने ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करें।

इसलिए समय आ गया है कि हम सभी को इस बढ़ती हुई समस्या का समाधान करना चाहिए और इसके परिणामों के लिए भुगतान करने से पहले अपनी पहल करनी चाहिए। आओ पानी बचाएं! एक जिम्मेदार नागरिक बनें और देश और दुनिया को आसन्न आपदा से बचाने में मदद करें। ❑

चिकित्सा पर्यटन

✍डॉ. नवनीत स्वरगिरी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

चिकित्सा पर्यटन का तात्पर्य चिकित्सा उपचार प्राप्त करने के लिए विदेश यात्रा करने वाले लोगों से है। अतीत में, यह आमतौर पर उन लोगों को संदर्भित करता था जो घर पर अनुपलब्ध उपचार के लिए कम विकसित देशों से उच्च विकसित देशों में प्रमुख चिकित्सा केंद्रों की यात्रा करते थे। हालांकि, हाल के वर्षों में यह समान रूप से विकसित देशों के उन लोगों को संदर्भित कर सकता है जो कम कीमत वाले चिकित्सा उपचार के लिए विकासशील देशों की यात्रा करते हैं। प्रेरणा घरेलू देश में अनुपलब्ध या गैर-लाइसेंस प्राप्त चिकित्सा सेवाओं के लिए भी हो सकती है: चिकित्सा एजेंसियों (एफडीए) के बीच मतभेद हैं, EMA आदि) दुनिया भर में, चाहे उनके देश में कोई दवा स्वीकृत हो या नहीं। यूरोप के भीतर भी, हालांकि चिकित्सा प्रोटोकॉल को यूरोपीय चिकित्सा एजेंसी (ईएमए) द्वारा अनुमोदित किया जा सकता है, कई देशों के अपने स्वयं के समीक्षा संगठन हैं ताकि यह मूल्यांकन किया जा सके कि क्या समान चिकित्सा प्रोटोकॉल "लागत प्रभावी" होगा, ताकि रोगियों को अंतर का सामना करना पड़े। चिकित्सा प्रोटोकॉल, विशेष रूप से इन दवाओं की पहुंच में, जिसे आंशिक रूप से विशेष स्वास्थ्य प्रणाली की वित्तीय ताकत द्वारा समझाया जा सकता है।

चिकित्सा पर्यटन अक्सर सर्जरी (कॉस्मेटिक या अन्यथा) या इसी तरह के उपचार के लिए होता है, हालांकि लोग दंत पर्यटन या प्रजनन पर्यटन के लिए भी यात्रा करते हैं। दुर्लभ परिस्थितियों वाले लोग उन देशों की यात्रा कर सकते हैं जहां उपचार को बेहतर ढंग से समझा जाता है। हालांकि, लगभग सभी प्रकार की स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध हैं, जिनमें मनोचिकित्सा, वैकल्पिक चिकित्सा, स्वास्थ्य देखभाल और यहां तक कि दफन सेवाएं भी शामिल हैं।

स्वास्थ्य पर्यटन यात्रा के लिए एक व्यापक शब्द है जो चिकित्सा उपचार और स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग पर केंद्रित है। यह स्वास्थ्य-उन्मुख पर्यटन के व्यापक क्षेत्र को कवर करता है जिसमें निवारक और स्वास्थ्य-प्रवाहकीय उपचार से लेकर यात्रा के पुनर्वास और उपचारात्मक रूप शामिल हैं। वेलनेस टूरिज्म एक संबंधित क्षेत्र है।

इतिहास

चिकित्सा उपचार के लिए यात्रा करने वाले लोगों का पहला रिकॉर्ड किया गया उदाहरण हजारों साल पहले का है जब ग्रीक तीर्थयात्री पूर्वी भूमध्यसागर से सैरोनिक खाड़ी के एक छोटे से क्षेत्र में एपिडॉरिया नामक यात्रा करते थे। यह क्षेत्र हीलिंग देवता आस्कलेपियोस का अभयारण्य था।

स्पा शहर और सैनिटेरिया चिकित्सा पर्यटन के प्रारंभिक रूप थे। 18वीं शताब्दी में यूरोप के रोगियों ने स्पा का दौरा किया क्योंकि वे कथित रूप से स्वास्थ्य देने वाले खनिज पानी वाले स्थान थे, गाउट से लेकर यकृत विकारों और ब्रोंकाइटिस तक की बीमारियों का इलाज करते थे।

विवरण

जिन कारकों ने चिकित्सा यात्रा की बढ़ती लोकप्रियता को जन्म दिया है उनमें स्वास्थ्य देखभाल की उच्च लागत, कुछ प्रक्रियाओं के लिए लंबा प्रतीक्षा समय, अंतर्राष्ट्रीय यात्रा की आसानी और सामर्थ्य, और कई देशों में प्रौद्योगिकी और देखभाल के मानकों दोनों में सुधार शामिल हैं। प्रतीक्षा समय से बचना यूके से चिकित्सा पर्यटन के लिए प्रमुख कारक है, जबकि अमेरिका में इसका मुख्य कारण विदेशों में सस्ती कीमतें हैं। इसके अलावा, विकसित देशों में भी मृत्यु दर अत्यंत भिन्न है, अर्थात यूके बनाम अमेरिका सहित सात अन्य प्रमुख देश।

चिकित्सा पर्यटन स्थलों में की जाने वाली कई शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं में अन्य देशों में उनके द्वारा की जाने वाली कीमत का एक अंश खर्च होता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, एक लीवर प्रत्यारोपण जिसकी लागत US$300,000 हो सकती है, ताइवान में आमतौर पर US$91,000 का खर्च आएगा। [9] चिकित्सा यात्रा का एक बड़ा आकर्षण सुविधा और गति है। सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को संचालित करने वाले देशों में अक्सर कुछ ऑपरेशनों के लिए लंबा प्रतीक्षा समय होता है, उदाहरण के लिए, अनुमानित 782,936 कनाडाई रोगियों ने 2005 में चिकित्सा प्रतीक्षा सूची पर औसतन 9.4 सप्ताह का प्रतीक्षा समय बिताया। [10] कनाडा ने प्रतीक्षा समय मानदंड भी निर्धारित किए हैं। गैर-जरूरी चिकित्सा प्रक्रियाओं के लिए, जिसमें हिप रिप्लेसमेंट के लिए 26 सप्ताह की प्रतीक्षा अवधि और मोतियाबिंद सर्जरी के लिए 16 सप्ताह की प्रतीक्षा शामिल है। ❑

अतरंगी-सतरंगी कुआलालंपुर

✍मैत्रिका जोशी
आश्रित - रितेश मोहन जोशी
के जी बेसिन परियोजना, काकीनाड़ा

जिस तरह विश्व में सात महासागर हैं, सात महाद्वीप हैं, इंद्रधनुष में रंग भी सात हैं, और संगीत में सुर भी सात हैं, और तो और विश्व में अजूबे भी सात है, इसी तरह मलेशिया के कुआलालंपुर शहर में शीर्ष की सात गतिविधियां हैं, जिसके बारे में मैंने लिखने का चुनाव किया।

मुझे किसी विदेशी स्थान में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मलेशिया देश के कुआलालम्पुर शहर में स्थित है जो मेरा पहला विदेशी अनुभव था। एशिया के सबसे अधिक आबादी वाले शहरों में से एक में तीन साल का प्रवास था वो शहर है कुआलालंपुर, जिसे प्रायः के. एल. के नाम से भी जाना जाता है। के. एल. एक जीवंत और रमणीय शहर है। यह अपनी प्राचीन एवं रंगीन संस्कृति के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। आइये, एक-एक करके शीर्ष के सात रमणीक स्थल का मिल के दौरा करते हैं और यादों को पुनः एक बार जीवंत करते हैं।

1. पेट्रोनास ट्विन टावर्स

ज़ाहिर है, के. एल. और पेट्रोनास जुड़वाँ स्तम्भ (ट्विन टावर्स) एक दूसरे के पर्यायवाची है। ये टावर के. एल. के हृदय में स्थित है और वाकई में के. एल. का दिल ही हैं। पेट्रोनास ट्विन टावर गगनचुंबी इमारत, कार्यालय भवनों की एक जोड़ी है जो दुनिया की सबसे ऊंची संरचनाओं में से एक हैं। दिन के दौरान, चिकनी, चमचमाती कांच की खिड़कियों से उछलती सूर्य की किरणें जब आंख में गिरती है तो इन जुड़वाँ स्तम्भों को और भी अधिक आकर्षक बनाती हैं। ठीक इसी तरह रात को इन स्तम्भों के जोड़ी का दर्शन करना काफी अलौकिक है, अविश्वसनीय है। इस खूबसूरत दृश्य के लिए हर दिन उठना उतना ही सार्थक है जितना कि न्यूयॉर्क शहर के क्षितिज के आसपास का नज़ारा। गोधूलि ढलते ही, मानो हजारों टिमटिमाती रोशनी टावरों के चारों ओर फैल जाती है। स्तम्भों की ये जोड़ी करीब चालीस माले पे एक पुल से जुड़ी है जिसे स्काई ब्रिज भी कहते हैं, पर्यटकों को सिर्फ यहाँ तक जाने की अनुमति है। स्काई ब्रिज के उतर के ज़मीन पे आना और फिर दो माले नीचे स्थित सूरिया केएलसीसी मॉल की हलचल देखने से हृदय काफी रोमांचित हो जाता है। पर्यटकों और स्थानीय लोगों से सूर्या के. एल. सी. सी. हमेशा भरा रहता है।

2. मेनारा के. एल. टावर

के. एल. टावर, जिसे आमतौर पर मेनारा के.एल. के नाम से जाना जाता है, दुनिया का सातवां सबसे ऊंचा दूरसंचार टावर है। जबसे ऊपर स्थित, अवलोकन स्थल (व्यूइंग डेक) के लिए लिफ्ट की सवारी अविश्वसनीय रूप से संक्षिप्त है, और जैसे ही आप आकाश की ओर बढ़ते हैं, आपके कानों में दबाव बढ़ जाता है। अवलोकन स्थल से पूरे शहर का 360 डिग्री का अलौकिक दृश्य आपकी

सांसें रोक देगा। नीचे, बड़ी बड़ी इमारतें छोटी-छोटी माचिस की डिब्बियों के ढेर से मिलती-जुलती हैं और बड़ी बड़ी कारें जो कंक्रीट के राजमार्गों पर दौड़ रही हैं, ऐसा लगता है मानो किसी

पतली सी टहनी में चींटियां रेंग रही हैं। डेक की परिधि पर खड़े दुनिया भर से आये हुए पर्यटक अपने प्रियजनों के लिए तोहफे खरीदते नज़र आएंगे। 'स्काईडेक: रिवॉल्विंग रेस्तरां' अर्थात घूमता जलपान स्थल है। यह अवलोकन स्थल (व्यूइंग डेक) से एक माला ऊपर स्थित है। आसमान में बैठकर भोजन करना, पूरा पैसा वसूल अनुभव है। टावर के नीचे एक भारतीय जलपान स्थल भी है जो काफी प्रचलित है।

3. बाटू की गुफाएं

के. एल. में सबसे प्राचीन हिंदू पवित्र स्थलों में से एक है बाटू की गुफाएं। यह हिंदू मंदिरों और मंदिरों से भरी गुफाओं की एक श्रृंखला। लेकिन वहां पहुंचने के लिए 272 सीढ़ियां चढ़ने की आवश्यकता होती है जो अपने आप में एक भीषण अनुभव है। भगवान मुरुगन की एक विशाल स्वर्ण प्रतिमा द्वार पे ही स्थापित है जिसे मीलों दूर से भी देखा जा सकता है। आपकी यात्रा को और आनंदमयी बनाने के लिए, बंदरों की एक जमात आपका मनोरंजन करेगी।

4. एक्वेरिया के. एल. सी. सी.

एक्वेरिया के. एल. सी. सी. मलेशिया और दुनिया भर के 5,000 से अधिक विभिन्न जीवों के साथ एक विशाल मछलीघर है। जलीय जीवों की विविधता आश्चर्यजनक है और पिरान्हा (दुनिया की सबसे घातक मछलियों) से भरे टैंक को सेकंडों में मांस खाते हुए देखना अविश्वसनीय है। शार्क, स्टिंगरे और समुद्री कछुओं से भरे एक चलते-फिरते वॉकवे के साथ 90 मीटर की कांच की सुरंग इस दर्शनीय स्थल का केंद्र बिंदु है। सुरंग के अंदर चलना और अपने चारों ओर समुद्री जीव को बेखटक घूमते हुए देखना एक क़तई

अलौकिक है, ऐसा महसूस होता है मानो आप समुद्र के नीचे डूबे हुए हैं और किसी जलीय जनजाति के सदस्य हैं।

5. पेटलिंग स्ट्रीट मार्केट

पेटलिंग स्ट्रीट अपने नकली डिजाइनर उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है। कहते हैं यहाँ ओरिजिनल फेक मिलता है जो अंग्रेजी भाषा

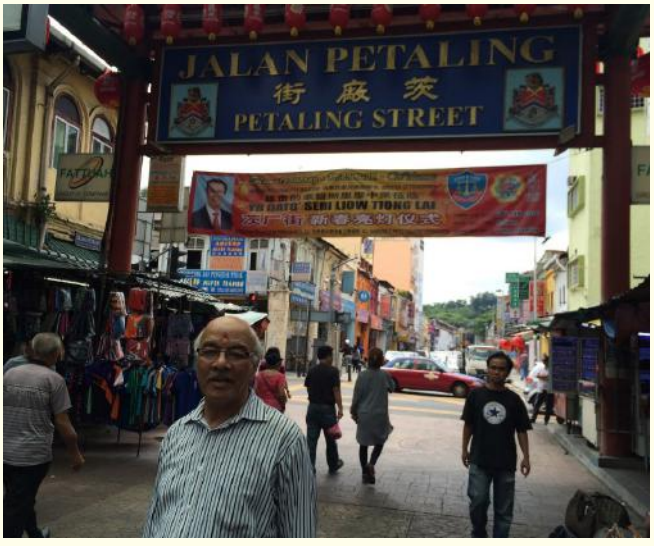

में आक्सीमोरन की श्रेणी में आता है। पर्यटक और स्थानीय लोग सड़क में लगी दुकानों एवं उसमें बिकने वाले आकर्षक उत्पादों का आनंद लेते हैं, जो मोलभाव करने वालों के लिए आदर्श है। मुख्य प्रवेश द्वार को सोने की सुलेख में "जालान पेटलिंग" शब्दों के साथ सुसज्जित किया गया है । इस गली में कभी चैन की घड़ी नहीं आती; दुकान से दुकान और ठिकाने से ठिकाने तक लगातार बकबक जारी है। तले हुए नूडल्स से लेकर नासी लेमाक (मलेशियन खाना) से लेकर फ्लेवर्ड स्नो कोन तक सब उपलब्ध है। स्ट्रीट फूड की विशाल विविधता का उल्लेख नहीं करने से उतना आनंद नहीं आएगा जितना यहाँ जाके इन खानों का आनंद लेके। इस बाजार में कुछ भी और सब कुछ मिल सकता है, जैसे रोलेक्स की ओरिजिनल फेक घड़ी 100 रिंगगित (1,500 रुपये) में।

6. के. एल. बर्ड पार्क

दुनिया की सबसे बड़ी फ्री-फ्लाइट वॉक-इन एवियरी, के. एल. बर्ड पार्क (चिड़ियों का चिड़ियाघर) में स्थित है। दुनिया भर से विभिन्न

प्रजातियों के लगभग 3000 पक्षी हैं, जिनमें से कुछ पिंजरे या बाड़ों में भी नहीं हैं। यहाँ की पगडंडी आपको ऐसा महसूस कराती है कि आप एक उष्ण कटिबंधीय वर्षावन से गुजर रहे हैं, जो आपके चारों ओर उड़ने वाले सुंदर, चमकीले रंग के पक्षियों से भरा हुआ है। ध्यान बस इस बात का रहे कि अगर अपनी आइसक्रीम का आनंद लेना है, तो चुपचाप लें, क्योंकि यदि आप नहीं करते हैं तो पीले पैरों वाले सफेद छोटे पक्षी आपके पीछे पड़ जायेंगे। बर्ड पार्क में पूरा दिन निकल जायेगा। आप थक चुके होंगे पर दो-चार शो अभी भी बाकी होंगे। यहाँ का मुख्य आकर्षण है बहुत सारे रंगीन पक्षी जो आपकी हाथ पैर सर में बैठ जाते हैं और आप फोटो खींचा सकते हैं। इतने सारे पक्षियों से घिरा होना एक शानदार अनुभूति है।

7. चिड़ियाघर नेगारा (ज़ू नेगारा)

चिड़ियाघर नेगारा में 476 विशिष्ट प्रजातियों का प्रतिनिधित्व करने वाले 137 जानवर हैं। चिड़ियाघर नेगारा आपका औसत चिड़ियाघर नहीं है; यह एक असामान्य और अपनी तरह का अनूठा प्रदर्शन केंद्र है। वहाँ एक विशाल पांडा संरक्षण केंद्र है। बांस को कुतरते हुए पूरी तरह से तल्लीन जोड़ी को पूरे दिन लेटते हुए देखने का यह एक जीवन भर का अवसर है। एप सेंटर की ओर बढ़ते हुए, कुआलालंपुर का चिड़ियाघर दुनिया के कुछ दुर्लभ चिंपांज़ी और मकाउ का घर है। वानर घूमने के लिए स्वतंत्र हैं, और यह लगभग

ऐसा है जैसे उन्होंने अपने प्राकृतिक आवास को कभी नहीं छोड़ा है, उन्हें घने पत्ते में खेलते हुए देख रहे हैं। इस चिड़ियाघर में एक पूरा दिन प्रकृति से घिरे और प्राणियों की प्रशंसा करने में व्यतीत हो सकता है।

यूं तो कुआलालम्पुर में देखने योग्य और भी अनगिनत जगह हैं और अनुभव करने योग्य क्रियाकलाप पर वह किस्से किसी और दिन के लिए।

फिलहाल "सात समंदर पार मैं तेरे पीछे-पीछे आ गयी, कुआलालुम्पुर, में तेरे पीछे-पीछे आ गयी...।" ❑

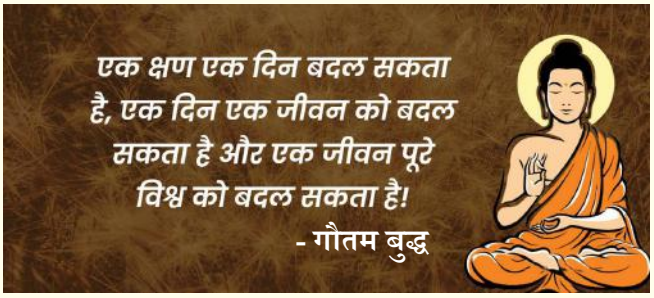

"नाम फाके"
असम में ताई-बौद्ध संस्कृति का एक सूक्ष्म मगर हैरतअंगेज केंद्र

✍ **प्रतीक बरुआ**
उप मुख्य अभियंता
कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

असम सदियों से सैकड़ों जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों के जन्म, आश्रय, विकास और विस्तार का रंग मंच रहा है। पूरे भूगोल का एक बहुत ही छोटा हिस्सा होने के बावजूद पिछले कुछ शताब्दियों में असम प्रदेश, इंडो आर्यन, ऑस्ट्रो-एशियाई और तिब्बती-बर्मी जैसी विशालकाय भाषिक संस्कृतियों का मिलन क्षेत्र बनता देखा गया है। इन सभी संस्कृतियों के प्रभाव से उज्जीवित होकर आज की सम्मिश्र और अनन्य असमिया संस्कृति उभर कर आयी है।

ताई फाके ऐसी ही एक जाति और संस्कृति है जिसकी जड़ें असम के बाहर की हैं लेकिन अंततः वे लोग असम में आ कर बसें और असमिया संस्कृति को समृद्ध करते हुए क्रमशः असम और असम की संस्कृति का अभिन्न अंग बन गए। महान ताई जाति के वंशज ताई फाके लोगों ने अठारहवीं शताब्दी के अंतिम क्षणों में असम में पदार्पण किया। विशाल ताई जाति, यायावर मंगोल महा-जाति की एक विशिष्ट शाखा है जो एशिया महाद्वीप के कोने-कोने में फैली हुई है। ताई जाति के सदस्य चीन और पूर्वी भारत के प्रांतों में व्यापक रूप से विस्तृत हैं। अपनी परिसीमा में ताई जाति पश्चिम की दिशा में असम तक तथा पूरब की ओर चीन के हैनान प्रदेश तक देखी जाती है। उत्तरी दिशा में चीन के यूनान प्रदेश तक फैली हुई ये जाति दक्षिण में थाईलैंड तक अपना प्रभाव आज भी कायम रखे हुए है। लेकिन जहाँ भी ताई जाति का प्रवेश होता, अक्सर वहीँ उनको किसी दूसरे नाम से जाना जाता। जैसे की बर्मा में ताई लोगों को शान समुदाय के नाम से, थाईलैंड में सियामीज और चीनी यूनान प्रदेश में उन्हें पाई सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है। कंबोडिया, लाओस और वियतनाम जैसे देशों में ताई लोग लाओ समुदाय के रूप में प्रसिद्ध हैं।

उसी तरह, असम में ताई फाके लोगों को **फाकियाल** समुदाय के रूप में जाना जाता है। असम के कई दिग्गज इतिहासकार फाकियाल समुदाय को असम में 1228 से 1826 तक 600 साल राज करने वाले विशाल आहोम वंश के अपरोक्ष

वंशज का दर्जा भी देते हैं। नामचीन इतिहासकार एडवर्ड गैट के मुताबिक अठारहवीं शताब्दी में ताई फाके लोगों ने वर्तमान के भारत भूखंड में प्रवेश करके अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में निंगरू गाँव के मूंगकांगटात नामक छोटे से कसबे में अपना पहला बसेरा खड़ा किया था। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आहोम सेना के एक उप-सेनापति चंद्र गोहाँई ने फाकियाल समुदाय को अरुणाचल से असम के जोरहाट जिले में स्थानांतरित किया। जोरहाट उस समय आहोम साम्राज्य की राजधानी हुआ करती थी। बाद में, बर्मा सेना द्वारा असम के अधिकांश हिस्सों को आहोम सेना से छीनने के उपरांत, उन्नीसवीं शताब्दी में सं 1817 और 1824 के बीच में हुई ब्रिटिश सेना के पूर्वी भारत आक्रमण के दौरान बर्मा सेना अधिकारियों के द्वारा फाकियाल लोगों को म्यांमार के काचीन प्रदेश के मोगौंग जिले में फिर से स्थानांतरण का आदेश मिला। मगर, फाकियाल समुदाय के अधिकांश सदस्य इसी यात्रा के दौरान उत्तरी असम में बूढ़ी दिहिंग नदी के दक्षिणी तटों पर ही बस गए। इन तटों की उपजाऊ ज़मीन और ब्रिटिश तथा बर्मा सेना के प्रत्यक्ष प्रभाव से दूर होने के कारण वे बिना किसी रोक टोक के इन इलाकों में बस गए। इन्हीं में से एक इलाके को हम लोग अब **नाम फाकियाल** गाँव के नाम

से पहचानते हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह इलाका असम की राजधानी दिसपुर (गुवाहाटी) से प्राय: 550 किलोमीटर की दूरी पर पूर्वी दिशा में स्थित है और ऑयल इंडिया लिमिटेड क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान से महज 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थापित है।

फाकियाल समुदाय से जुड़ी **"फाके"** शब्द का एक विशिष्ट पूर्ववृत्त है। **"फाके"** शब्द दो ताई शब्दों के संयोजन से बनी है। एक शब्द है **"फा"** जिसका अर्थ है "दीवार" और दूसरा है **"के"** जिसका तात्पर्य है "प्राचीन"। म्यांमार में प्राचीन शीला या पत्थर के दीवारों के आसपास बसे लोगों को वहाँ **"कुनफाके"** कहा जाता था। "कुनफाके" का मतलब है "लोग जो देश के 'फाके' हिस्सों में रहते हैं"। इतिहासकारों का यह भी मानना है के वही "कुनफाके" वर्ग के वंशज ही आज के नाम फाके गाँव में रहते हैं। इसके अतिरिक्त, "फाकियाल" समुदाय के लोग असम और अरुणाचल प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में भी बस रहे हैं। **"बोर फाके" "टिपाम फाके" "नाम चाई" "मन लॉन्ग" "नाम लाइ"** जैसे इलाकों में भी फाकियाल लोग पाए जाते हैं। पर "नाम फाके" में उनकी संख्या अधिक है।

ताई फाके इतिहास के अनुसार नाम फाके गाँव की स्थापना सं 1850 में की गयी थी। करीब 1000 सदस्यों की नाम फाके गाँव की फाकियाल सम्प्रदाय संख्या के हिसाब से छोटी तो है मगर उन्होंने अपने सैकड़ों साल पुराने रीति-रिवाज़ों का संरक्षण करके अपने अनोखे संस्कृति को आज भी जीवित रखा है और असम की विविध संस्कृति के भण्डार को आभूषित किया है। यह ताई समुदाय गौतम बुद्ध को अपना भगवान मानता है और बौद्ध धर्म की साधना के लिए नाम फाके गाँव में एक विशाल बौद्ध मठ का निर्माण किया है। नाम फाके गाँव की शान **नाम फाके मठ** पास के नाहरकटिया नगर से 5 किलोमीटर और नाहरकटिया महाविद्यालय से 2 किलोमीटर दूर स्थित है। लम्बी दूरी तय करके आने वाले पर्यटकों के लिए नाम फाके गाँव से सबसे निकट रेल स्टेशन नाहरकटिया और हवाई अड्डा डिब्रूगढ़ है।

इस विस्मयकारी बौद्ध मठ में बहुत सारे आकर्षक मूर्तियों, स्मारकों और धरोहरों की स्थापना की गयी है। इन में शायद सबसे आकर्षक है एक **बौद्ध पैगोडा** या बौद्ध स्तूप जो 1930 के अंत तक बन कर तैयार हुई थी। एक प्रतीकात्मक अशोक स्तंभ आस पास के सारे स्मारकों में सबसे ऊँचा और अत्यंत मनमोहक है। यह स्तंभ ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के स्मरणार्थ निर्माण की गयी है। इस स्तंभ के निकट एक मज़बूत पैरबाँसा गृह की स्थापना की गयी है जिसे **चैत्य-गृह** कहा जाता है। दोहरी प्रविष्टि वाले इस गृह में धार्मिक भेंट अर्पण करने की सुविधा की गयी है। इस गृह के पिछले प्रवेश द्वार के समीप बौद्ध स्तूप को देखा जा सकता है। मठ परिसर में एक विशेष जलाशय भी इच्छुक पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इस तालाब को **मुसालिन्दा** जलाशय या **नोंग मुंग चिरिंगटा** भी कहा जाता है। जलाशय के मध्य विन्दु में ध्यान मग्न भगवान बुद्ध की मूर्ति और उनकी सुरक्षा हेतु फ़न फैलाये हुए सांप की आकृति देखी जा सकती है। पौराणिक बौद्ध कथा के अनुसार सर्प सम्राट मूसा लिंडा ने धरती की गहराईयों में छिपे अपने आवास से निकल कर भगवान बुद्ध के ज्ञानोदय के दौरान उनको एक विध्वंसकारी वर्षा से सुरक्षित रखने के लिए अपने विशालकाय फ़न का प्रयोग किया था। इस तालाब की वास्तुकला उस पवित्र कथा का एक सुंदर चित्रण है।

नाम फाके मठ के मुख्य पुजारी को **ज्ञानपाल** के नाम से जाना जाता है। बौद्ध भिक्षु और उनके शिष्य मठ परिसर में निवास करते हैं। मठ के मुख्य मंदिर के अंदर आसन की भंगिमा में भगवान बुद्ध की 6 फीट ऊंची और विश्राम की भंगिमा में एक और राजसी स्वर्णिम प्रतिमा है। खूबसूरती से तैयार किए गए *मोज़ेक, टाइलों* और संगमरमर के फर्श इस बौद्ध मंदिर को एक परिष्कृत लेकिन आध्यात्मिक माहौल देते हैं। मठ मूल रूप से बौद्ध भिक्षुओं द्वारा चलाया जाता है और नाम फाके गाँव के फाकियाल लोग भिक्षुओं को भोजन

और पारंपरिक पोशाक की आपूर्ति सहित हर सहायता के लिए प्रस्तुत रहते हैं।

फाकियाल समुदाय त्योहार-प्रेमी होते हैं। मार्च के महीने में, नाम फाके गाँव में **"पोई-नेन-ची"** उत्सव मनाया जाता हैं जिसमें वे **"चैत्य-गृह"** में भगवान बुद्ध की पूजा करते हैं। **"पोई-चांग-केन"** या **"पोई-शोन-नाम"** या **"पी-हू"** यहां एक अनन्य उत्सव है जो हर साल **"विशुव संक्रांति"** पर मनाया जाता है। इस दिन सूर्य अपने आकाशीय पथ पर "मेष" (मेष राशि) में प्रवेश करता है। यह आयोजन आमतौर पर अप्रैल के महीने में होता है और रंगाली बिहू के साथ-साथ मनाया जाता है, जो असम में मनाया जाने वाला सबसे लोकप्रिय त्योहार है और असमिया नव वर्ष के अवसर पर आयोजित किया जाता है। कई इतिहासकारों का यह भी मानना है कि "बिहू" नाम की उत्पत्ति ही ताई शब्द "पी-हू" या "पोई-हू" से हुई थी। यह भी माना जाता है कि **"चांग-केन"** शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "संक्रांति" से हुई है। इस आयोजन के दौरान, मठ के अंदर बुद्ध की मूर्तियों को **"शोनफ्रा"** नामक एक विशेष रूप से प्रस्तुत किए गए गृह में ले जाया जाता है और मूर्तियों को जल से नहलाया जाता है। नहलाये हुए मूर्तियों से जो जल निकलता है, उसे **"मो-नाम-मेटा"** नामक एक विशेष बर्तन में एकत्र किया जाता है और उपस्थित भक्तों पर छिड़का जाता है ताकि अशुभ शक्तियों से वे सुरक्षित रहें। बुद्ध पूर्णिमा त्यौहार जिसे फाकियाल समुदाय **"पोई-नन-होक"** कहते हैं, एक पवित्र पूर्णिमा की रात को मनाया जाता है, जो भगवान बुद्ध के पवित्र आविर्भाव का एक जश्न है। त्यौहार की तारीख साल-दर-साल बदलती रहती है, लेकिन आमतौर पर अप्रैल या मई में पड़ती है। बौद्ध भिक्षुओं को **"कैथिन"** नाम के लाल रंग के धार्मिक वस्त्रों के वितरण हेतु अक्टूबर में आयोजित **"पाई-कैथिन"** नाम फाके गाँव में एक और महत्त्वपूर्ण धार्मिक त्यौहार है।

फाकियाल लोगों के अपने कई पारंपरिक नृत्य होते हैं। उनमें से, विशिष्ट अभ्यागतों के स्वागत के लिए किए जाने वाले नृत्य को **"कपन"** कहते हैं। **"कचोंग"** नृत्य शैली में महिलाएँ रंगीन छतरियों का उपयोग करती हैं। **"काकोंग"** नाम के एक अन्य लोकप्रिय नृत्य में विशिष्ट लयबद्ध नगारों का व्यवहार होता है।

फाकियाल समुदाय द्वारा बोली जाने वाली एकाक्षरी भाषा चीन-तिब्बती भाषाई समूह की सियामीज-चीनी शाखा से सम्बंधित है। फाकियाल भाषा में 10 स्वर ध्वनिग्राम, 15 व्यंजन ध्वनिग्राम, कुछ अर्ध-स्वर, 3 व्यंजन समूह और कई द्विअर्थी संधिस्वर होते हैं। द्विअर्थी संधिस्वर मतलब एक एकात्मक स्वर जो अपने उच्चारण के दौरान गुणवत्ता को बदलता है यानी यह जीभ की संचलन के साथ एक उच्चारण से दूसरे में परिवर्तित होता है। फाकियाल भाषा "तान" वाले भाषाओं की श्रेणी में आती है, जहाँ प्रत्येक शब्दांश में एक अंतर्निहित आवाज-स्तर होता है और समान खंडीय विशेषताओं वाले शब्दांशों के बीच न्यूनतम जोड़े मौजूद होते हैं लेकिन अलग-अलग स्वर होते हैं। फाकियाल भाषा में 6 प्रमुख स्वर होते हैं- उठना, गिरना, ऊँचा (मध्य), ऊँचा (गिरना), निम्न (मध्य) और निम्न। शब्दों के बाद उचित प्रत्ययों का उपयोग करके फाकियाल भाषा की एकाक्षरी प्रकृति को बनाए रखा जाता है। नाम फाके के ग्रामीण प्राचीन पाली भाषा से भी अच्छी तरह अभ्यस्त हैं। अधिकांश पुरातन पवित्र बौद्ध ग्रंथ पाली भाषा में ही लिखे गए थे।

18वीं शताब्दी में असम में प्रवेश करते समय, ताई फाके लोगों ने अपने साथ कुछ मूल्यवान धार्मिक ग्रंथों का भी स्थानांतरण किया था। इनमें से कुछ किताबें अभी भी मठ के अंदर एक पुस्तकालय में देखी जा सकती हैं। इस पुस्तकालय को सुशोभित करने वाली सबसे मूल्यवान ग्रन्थ 200 साल पुरानी **"लिक-खम"** पांडुलिपियों की शृंखला है। इस शृंखला में पाँच पुस्तकें हैं और उनमें से प्रत्येक में शुद्ध सोने से बने 12 पृष्ठ हैं। ताई भाषा में **'लिक'** का मतलब किताब और **'खम'** का मतलब स्वर्ण होता है। इनमें से तीन पांडुलिपियाँ 18 इंच लंबी और 6 इंच चौड़ी हैं, जबकि बाकी दो 14 इंच गुणा 6 इंच आकार की हैं। इन पवित्र सोने की लिपियों का अध्ययन मुख्य मंदिर के पास स्थित **"सीमाघा"** नामक एक विशेष बाड़े में किया जाता है। अध्ययन के लिए लिपियों को तभी निकाला जाता है

जब शिष्य-भिक्षु दीक्षा लेते हैं। दीक्षा एक बौद्ध धार्मिक समारोह है जिसमें भिक्षु सख्त आध्यात्मिक अनुशासन के जीवन का पालन करने का संकल्प लेते हैं। मठ का पुस्तकालय **"तुला पाट"** या ताड़ के पेड़ की पत्तियों पर लिखी गई **"फंग-शेन"** नामक एक और अनोखे पुस्तक का गर्वित संरक्षक है। इस 60 पृष्ठ की पुस्तक में इस दुनिया में जीवित प्राणियों के निर्माण को चित्रित करने वाली चित्र कथाएँ हैं। इस पुस्तक में चित्र बनाने के लिए पेड़ के पत्तों से रंग तैयार किए गए थे। इतिहास की इस सोने की खान के अंदर **"ची-लिक"** नामक कपड़ों पर लिखी गई तीन अनूठी किताबें भी मौजूद हैं, जिनमें से प्रत्येक पुस्तक लगभग 20 मीटर लंबी है। मूल महाकाव्यिक रचनाओं से अनुवादित लगभग 300 साल पुरानी दो अन्य उल्लेखनीय पुस्तकें भी वहीं संरक्षित हैं। (रामायण का अनुवाद) और **"धर्म पुत्तलम"** (महाभारत का अनुवाद) के नाम से इन्हें जाना जाता है।

कुछ विशेष पांडुलिपियों को छोड़कर, नाम फाके मठ पुस्तकालय में संरक्षित अन्य पांडुलिपियाँ **"सांचीपात"** (अगरु वृक्ष की छाल, जिसका वैज्ञानिक नाम **एक्विलरिया अगलोचा** है) पर लिखी गयीं हैं, जिस में भैंस की सूखी खाल की राख (जी, आपने सही पढ़ा !), रोहू मछली की आंतों (वैज्ञानिक नाम **लेबियो रोहिता**) और जंग लगे लोहे के चूर्ण के मिश्रण से प्रस्तुत एक विशेष स्याही व्यवहार की गयी थी। उचित संरक्षण विधियों के अभाव से पुस्तकालय के इन अमूल्य धार्मिक पुस्तकों की संख्या में भारी कमी आई है। वर्ष 2006 में यहाँ लगभग 2500 पुस्तकें थीं, लेकिन वर्तमान में इसमें केवल 1000 पुस्तकें ही देखने योग्य रह गयीं हैं।

फाकियाल समुदाय के लोग अपने पारंपरिक परिधानों को पहनकर गौरवान्वित महसूस करते हैं। महिलाएँ हाथ से बुने हुए रंग-बिरंगे कपड़े पहनती हैं। महिलाओं के लिए पारंपरिक पोशाक है टखने तक की लंबाई वाला **"चिन"** नामक वस्त्र जिसे कमर के चारों ओर **"चाई चिन"** नामक एक पेटी के आकार के कपड़े के टुकड़े से कसा जाता है और **"नांग वाट"** नामक कपड़े के साथ पहना जाता है। युवा लड़कियों को आमतौर पर सफेद पोशाक में देखा जाता है; मध्यम आयु वर्ग की महिलाएँ लाल और हरे रंग के परिधान पसंद करती हैं जबकि बड़ी उम्र की महिलाएँ बैंगनी और नीले रंग के कपड़े पसंद करती हैं। **"फाहु"** नामक एक शिरस्त्राण भी महिलाएँ पहनती हैं। पुरुष आम तौर पर छोटे कुर्ते और गहरे रंग की लुंगी पहनते हैं

जिन्हें **"फनुत"** कहा जाता है। कभी कभी उसके साथ वे पतले कंबल के आकार का कपड़ा ओढ़ते हैं जिसे **"चाडोर"** (चादर) कहा जाता है।

यद्यपि फाकियाल समाज अपने सभी त्योहारों और धार्मिक समारोहों का पालन कर एक व्यस्त वर्ष बिताता है, फिर भी उनका मुख्य कार्य अभी भी कृषि है। पिछले 150 वर्षों में, बूढ़ी दिहिंग नदी के उपजाऊ दक्षिण तट का उपयोग नाम फाके के ग्रामीणों द्वारा विभिन्न प्रकार की फसलों के साथ-साथ फलों और सब्जियों के उत्पादन के लिए किया गया है। लेकिन नदी के प्रचंड बाढ़ के पानी से हर साल भूमि का उत्तरोत्तर कटाव असहाय ग्रामीणों पर भारी पड़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में, बूढ़ी दिहिंग नदी खतरनाक रूप से मठ के करीब आ गई है और एक व्यापक बाढ़ इस ऐतिहासिक धार्मिक स्थल के अस्तित्व को हिला देने के लिए पर्याप्त हो सकती है। नाम फाके गाँव और मठ को आग्रासी नदी से बचाने के लिए सरकारी अधिकारियों द्वारा उचित कटाव नियंत्रण कार्रवाई समय की पुकार है। 2009 में नाम फाके गाँव बहुत ही कम समय के लिए संचार माध्यमों की सुर्खियों में रहा जब थाईलैंड की राजकुमारी महाचक्री सिरिंधोर्न ने इस एकांत स्थान की एक झलक पाने के लिए वहाँ अपने कदम रखे। जहाँ तक पर्यटन का सम्बंध है, नाम फाके अभी भी उत्सुक पर्यटकों के मानचित्र से दूर है और इस अल्पज्ञात ताई-बौद्ध सांस्कृतिक केंद्र पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए दूर संचार और सामाजिक माध्यमों पर इस जगह का अनावरण आवश्यक है। इसके साथ ही सरकारी अग्रसक्रियता निश्चित रूप से इस अनन्वेषित ऐतिहासिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल को सम्भावनापूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने में उपयोगी साबित होगी। बस इंतज़ार है इस दिशा में सभी समर्थवान व्यक्तिओं और प्रतिष्ठानों के ठोस कदमों का ! ❑

जब मैं कश्मीर से मिला...
कश्मीर: जन्नत की यात्रा

संदीप चक्रवर्ती
प्रबंधक (सी एंड पी)
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

"जीवन में परिवर्तन ही एकमात्र स्थिर है"।

मेरे लिए नई जगहों की यात्रा सुखद बदलाव है। यह एकरसता (monotonous) को तोड़ता है और उसे नए परिदृश्य (landscapes) और लोगों से परिचित कराता है। हम हमेशा से कश्मीर जाना चाहते थे। इसलिए अप्रैल में मैंने अपने माता-पिता और दीदी को धरती पर स्वर्ग दिखाने के लिए ले जाने का फैसला किया।

हमने गुवाहाटी से श्रीनगर का सफर गो फर्स्ट एयरवेज से किया और फ्लाइट शाम 6:30 बजे श्रीनगर पहुंची।

लाल चौक श्रीनगर में पहली रात: हमने makemytrip.com के जरिए लाल चौक पर अपना होटल रूम बुक किया था। श्रीनगर का लालचौक कॉरपोरेट-बिजनेस हब है। होटल के कमरे की बालकनी से सामने घंटाघर दिखता है। दिनभर चहल-पहल और जवानों का पहरा रहता है। शाम 6:30 बजे मार्केट बंद होने लगती है।

दूसरा दिन: श्रीनगर में दर्शनीय स्थलों की यात्रा

कश्मीर अपने अनगिनत बागों के कारण धरती पर स्वर्ग के रूप में जाना जाता है। कश्मीर में हमने सबसे पहले जिस स्थान पर जाने का फैसला किया, वह श्रीनगर में परी महल (Pari Mahal) था। बगीचों की मनमोहक सुंदरता ने पल भर में हमारा दिल चुरा लिया। बगीचे से डल झील (Dal Lake) का नज़ारा कितना दिव्य था।

हमारा अगला पड़ाव था चश्मा शाही (Chashma Shahee) गार्डन जो अपने ताजे पानी के प्राकृतिक झरने के लिए जाना जाता है। यह मुगल गार्डन विभिन्न रंगों के फूलों से घिरा हुआ है और झील का चिकित्सीय पानी इतना शांत दीखता है।

हमने 'ट्यूलिप गार्डन' (Tulip Garden) का भी दौरा किया, जो विभिन्न रंगों में रंगीन ट्यूलिप के साथ खिलने वाला एक और शानदार बगीचा है। एशिया में सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन कहा जाने वाला यह, इंदिरा गांधी मेमोरियल (Indira Ganghi Memorial Park) ट्यूलिप गार्डन श्रीनगर के दर्शनीय स्थलों में से एक है जो ज़बरवान (Zabarwan) पर्वत की तलहटी में स्थित है। बगीचे में कई प्रकार के अन्य फूल भी हैं जैसे डैफोडील्स, जलकुंभी, गुलाब, नार्सिसस और अन्य सजावटी पौधे।

30 हेक्टेयर भूमि में फैला, श्रीनगर का यह प्रमुख पर्यटन स्थल

वसंत ऋतु के दौरान जीवंत हो जाता है जब ट्यूलिप महोत्सव आयोजित किया जाता है। जनता के लिए खोला गया, यह त्योहार कश्मीर में सभी प्रकार के यात्रियों के लिए अवश्य देखना चाहिए क्योंकि इसका उद्देश्य बगीचे की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध कश्मीरी संस्कृति और इसके हस्तशिल्प (handicrafts) की झलक दिखाना है। कश्मीर के सभी खूबसूरत बगीचों में से ट्यूलिप गार्डन मेरा पसंदीदा था।

उस दिन हमने डल झील में अपने हाउसबोट में एक यादगार शिकारा (Shikara) की सवारी का आनंद लेकर अपने दिन का अंत शानदार ढंग से किया।

तीसरा दिन: गुलमर्ग- फूलों के प्रदेश

गुलमर्ग रोमांचक गोंडोला सवारी के लिए जाना जाता है। समुद्र तल से लगभग 2720 मीटर ऊंचाई पर स्थित गुलमर्ग कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। कश्मीर के बारहमुल्ले (Baramulla) जिले में स्थित गुलमर्ग धरती का खूबसूरत हिल स्टेशन है, जिसे हम फूलों के प्रदेश (meadow of flowers) के नाम से भी जानते हैं। गुलमर्ग में अच्छी खासी हिमपात (snowfall) होने के कारण यह snow activities जैसे mountain biking, skiing और sledge riding के लिए काफी प्रसिद्ध हैं।

गुलमर्ग की यात्रा में आप गंडोला लिफ्ट की सवारी करना बिल्कुल भी न भूलें। यह लिफ्ट की सावरी से हमने 13,500 मीटर ऊंचाई से कश्मीर की खूबसूरत वादियों के दर्शन किये, जिसे देखकर अलग ही आनंद की अनुभूति होती है। अगर आप golf के शौकीन हैं तो गुलमर्ग में आप golf course खेल का लुफ्त भी उठा सकते हैं।

तीसरे दिन के अंत में हम वापस श्रीनगर लौट आए और अपने होटल के कमरे में आराम किया।

दिन चौथा : पहलगाम (Pahalgam) की यात्रा

पहलगाम के लिए एक लंबी ड्राइव के बाद, हम लगभग 1 बजे घाटी पहुंचे। उस दिन खराब मौसम के कारण हमें अपने बुक किए गए होटल के कमरे में ही रहना पड़ा।

दिन पाँचवाँ : पहलगाम में घाटियों का भ्रमण

हमारा पहला पड़ाव अरु घाटी(Aru Valley) था - अनंतनाग में एक दूरस्थ स्वर्ग। अरु घाटी की सुंदरता का वर्णन करना कठिन है क्योंकि यह आप पर इतना गहरा जादू करती है। इतनी ठंड थी कि मैं अप्रैल के महीने में काँप रहा था। हमने स्थानीय दुकानों से स्वेटर और कश्मीरी कपड़े भी खरीदे।

चंदनवाड़ी (Chandanwari) के रास्ते में, हम मिनी-चिड़ियाघर में रुके जहाँ हमें तेंदुआ, भालू और हिरण दिखाई दिए। लिद्दर नदी के किनारे चंदनवाड़ी के लिए प्राकृतिक ड्राइव वास्तव में एक शानदार अनुभव था।

हमारा आखिरी पड़ाव बेताब वैली (Betaab Valley) था, जिसका नाम बॉलीवुड की मशहूर फिल्म के नाम पर रखा गया था। यह स्थान फिल्म में जितना लग रहा था, उससे कहीं अधिक मनोरम लग रहा था। हमने यादों को कैद करने के लिए तस्वीरें लीं और इन हसीं वादियों के वैभवता को कैद किया।

हमने रात के लिए होटल पहलगाम रिट्रीट में चेक इन किया। सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित हमारे लक्ज़री फैमिली सुइट से हमें घाटी के आकर्षक दृश्य दिखाई देते हैं। हम और अधिक नहीं मांग सकते थे।

दिन छठा : वापस श्रीनगर और स्थानीय दर्शनीय स्थलों की यात्रा

हमने दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए श्रीनगर वापस जाने का फैसला किया। हम निशांत (Nishant) गार्डन गए जहां हमने रंगीन कश्मीरी पोशाक में प्रथागत तस्वीरें क्लिक कीं। होटल शाहजहाँ रेजीडेंसी में चेक-इन किया।

श्रीनगर में आप boating का लुफ्त उठा सकते हैं। यहां का floating vegetable Market तथा floating डाकघर (Post office) पर्यटकों के लिए खास आकर्षण का केंद्र होता है। इसका अनुभव करने के लिए हम उस सुबह शिकारा की सवारी के लिए गए थे।

कश्मीर में शिकारा (Shikara) राइड के बारे में

शिकारा एक पारंपरिक गोंडोला प्रकार की हल्की रोइंग नाव है जो ज्यादातर अन्य झीलों के अलावा प्राचीन डल झील पर देखी जाती है। हाउसबोट के साथ-साथ इसे सांस्कृतिक प्रतीक भी माना जाता है। इन खूबसूरती से सजी हुई नावों को झील पर शांति से सरकते हुए देखना आंखों के लिए एक इलाज है।

एक बंगाली परिवार होने के नाते, विश्व प्रसिद्ध कश्मीरी व्यंजनों को न चखना हमारे लिए असंभव था। कश्मीरी व्यंजन और विशेष रूप से वाज़वान (wazwaan) पूरे विश्व भर में प्रचलित है। यदि आप शॉपिंग के शौकीन हैं तो यहां के लाल चौक मार्केट में आपको कश्मीरी शॉल, कश्मीरी सेब, बादाम और अखरोट ये सारी चीज़ें उपलब्ध हो जायेगी। श्रीनगर में बहुत ज्यादा बर्फ दिसंबर से फरवरी के महीने में पड़ती है। जो लोग गर्मियों में किसी पर्यटन स्थल घूमने का शौक रखते है उसके लिए कश्मीर बिल्कुल जन्नत जैसी है।

अगला पड़ाव प्रसिद्ध शंकराचार्य (Shankaracharya) मंदिर था। शंकराचार्य मंदिर श्रीनगर यात्रा के मुख्य आकर्षण में से एक है। मंदिर श्रीनगर में जबरवां रेंज पर शंकराचार्य पहाड़ी की चोटी पर है। पहाड़ी की चोटी से श्रीनगर के पूरे शहर का विहंगम दृश्य (Bird's eye view) देखा जा सकता है, विशेष रूप से डल झील। मंदिर के अंदर का शिवलिंग सबसे बड़ा है। मंदिर तक पहुंचने के लिए ~300 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं।

दिन सातवां : सोनमर्ग

7 वें दिन हमने सोनमर्ग की ओर प्रस्थान किया। सोनमर्ग जो कि जम्मू और कश्मीर राज्य के गंदरबल जिले में समुद्र तल से 2740 मीटर की ऊंचाई में बसा हुआ है। सोनमर्ग जिसका मतलब है- सोने का मैदान। सोनमर्ग कश्मीर के प्रसिद्ध हिल स्टेशन में से एक है, जो कि अपनी Treking activities के लिए काफी प्रचलित है। हिमालय की वादियों में बसा सोनमर्ग जिसे देखने के लिए हर साल हजारों की संख्या में पर्यटक यहां घूमने आते हैं।

सोनमर्ग कश्मीर का प्रमुख holiday destination हैं जहां आप skiing, sledge riding, horse riding के मज़े ले सकते हैं। यहां के बर्फ से ढके पर्वतमाला और चारों तरफ फैली हरे भरे घास के मैदानों का दृश्य लोगों के मन को मोह लेता है। सोनमर्ग bollywood की शूटिंग के लिए काफी प्रसिद्ध है। हमने सोनमर्ग में कई बेहतरीन जगहों का दौरा किया जैसे थाजीवास ग्लेशियर(Thajiwas glacier), जोजी ला झील, कृष्णासर झील और विशनसर झील। रात में हम वापस श्रीनगर में अपने होटल लौट आए।

दिन आठवां : वापस पवेलियन

गुवाहाटी के लिए हमारी उड़ान दोपहर 1 बजे निर्धारित थीं। कश्मीर में हमारा पूरा अनुभव सुंदर और स्वर्गीय था। कश्मीर घाटी की यह यात्रा हमारे दिलों के बहुत करीब है जिसे हमेशा संजोकर रखा जाएगा। मैं सभी को जीवन में कम से कम एक बार कश्मीर जाने का सुझाव देना चाहता हूं। ❑

यादों की पोटली: दुलियाजान

✍ **नवनीता राजपूत**
आश्रित - कमलजीत राजपूत
महाप्रबंधक (सतर्कता)
सतर्कता विभाग, नोएडा

प्रिय पाठक,

आशा है आप कुशलमंगल होंगे और 'ऑयल किरण' के इस संस्करण को आराम से अपनी कुर्सी पर बैठकर पढ़ रहे होंगे! तो चलिए, आज मैं आपको दुलियाजान ले चलती हूँ,क्या पता आप भी कुछ यादें अपनी यादों की पोटली में से निकालकर दोबारा जी लेंगे।

दुलियाजान मेरे लिए सिर्फ एक शहर नहीं था, वह एक भाव बन चुका हैं। करीब 16 साल वहाँ रह चुकी थी मैं। DZ की उन गलियों में छुपी है मेरी बचपन की यादें। सोच रही हूँ, क्यों न इन लम्हों को आज आप के साथ बाँट लूं।

तो चलिए शुरुआत से शुरू करते हैं। वैसे तो इस सफर को ऑयल हॉस्पिटल से शुरू होना चाहिए था, पर क्या करूँ मुझे तीन साल के पहले का कुछ ज्यादा याद नहीं। तो हम सीधा DZ-29 ही चलते हैं। मैंने चलना, पढ़ना, लिखना, बोलना, आदि इसी घर में रहकर सीखा था।

घर में कई मेहमान आते-जाते रहते थे जैसे कि - छिपकली, मेंढक, साँप, तरह - तरह के कीड़े - मकोड़े और मेरा प्रिय "छुक-छुक गाड़ी।" नहीं समझे न आप, वो है "millipede", लाल रंग का काफी सारे पैरों वाला। हज़ारों पैरों वाले इस छोटे प्राणी को हल्का सा छू दो तो ये ये गोल हो जाता था। बचपन से ही इसे गोल होकर वापस खुलते हुए देखने का मज़ा ही अलग था।

सर्दियों की छुट्टी का आनंद ही अलग था वहाँ। मैं और मेरी दीदी बैठ जाते थे घर के बगीचे में, आंवले के पेड़ के नीचे या फिर बेर के पेड़ के नीचे। अब सर्दी का मौसम, धूप खिली हुई, और पेड़ के नीचे बैठे हम, खिलौनों से खेलते, संतरे का जूस पीते और खूब जोर से हँसते जब आंवला या बेर हमारे सर पर गिरता। वहीं छोटी - छोटी चीटियाँ कहीं से दाना लाकर अपने घर की ओर जा रही होती थी।

फिर आती थी सरस्वती पूजा, पूरी गली में रौनक लगी होती थी। सारे अभिभावक पंडाल की सजावट और बाकी कामों की देख - रेख कर रहे होते। वहीं हम "बच्चा - पार्टी" या तो पार्क में खेल रहे होते या फिर किसी न किसी के घर/ गार्डन में। पार्क से याद आया, आप अगर अभी जाकर DZ का पार्क देखेंगे तो वहां, झूले, फूल, फेंस पर कार्टून्स बने हुए मिलेंगे। पर मैंने उस पार्क को बनते हुए देखा है। मैं तीन साल की थी, तब हम पार्क में मिट्टी के किले बनाते थे क्यूंकि उस पार्क में झूले, फूल, आदि, कुछ नहीं था। फिर मैं पाँच - छह साल की थी तब जाकर उसमें झूले लगे धीरे - धीरे फूल लगाए गए, चलने के लिए ट्रैक बनाया गया और जब मैं दस - ग्यारह साल की थी तब उस फेंस पर कार्टून्स बनाये।

DZ में पहले अलग ही रौनक होती थी। बाकी ब्लॉक्स का तो पता नहीं पर जब ब्लैकआउट होता था, तब खिड़की से झाँक कर “confirm” करने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी। आखिर "बोरता", “Baruah” अंकल बाहर निकल कर बातें जो करने लगते थे, साथ में सुनाई देती थी हँसी-ठिठोली की आवाजें। वो दिन भी क्या दिन थे! अब तो mail आ जाती हैं कि लाइट जाने की सम्भावना है या फिर हम सीधा MCB चेक कर लेते हैं। और मन न लगे ब्लैकआउट में तो फिर फ़ोन और इंस्टाग्राम जिंदाबाद!

हर शाम हम "बच्चा - पार्टी" बाहर अपने गली के दोस्तों के साथ खेलने निकल जाते। पहले तो मैं tricycle पर दीदी के दोस्तों के साथ जाती थी, उन सबके खेल देखती, Shadows के साथ खेलती (वही जो हम कमरे में अँधेरा करके एक टोर्च जलाकर, हाथों की मुद्राओं से कुत्ते, बिल्ली बनाकर कहानी बनाते थे), वह बचपन में

मुझे "magical show" लगता था क्योंकि मैं उस वक़्त समझ ही नहीं पाती थी की ये कुत्ते, बिल्ली दीवार पर नज़र कैसे आ रहे हैं। फिर मैं स्कूल जाने लगी, वहाँ दोस्त बनाये और फिर मैं दो पहिये वाली साइकिल उनके साथ चलती थी।

अब चलो स्कूल की बातें शुरू हो ही गयी हैं तो कुछ किस्से उसके भी बता ही देती हूँ। मेरा पहला स्कूल - "Tiny Tots". अब तो बिल्डिंग नयी बन गयी हैं पर जब मैं जाती थी और जितना मझे याद है मेरी कक्षा में "wooden benches" होती थीं और हम दो- दो की जोड़ी में अपनी classes लगते। मैं, और गली के दो बच्चे एक साथ स्कूल से आया - जाया करते। ब्रेक टाइम में हाथ धोने जाते पर वापस आते वक्त स्कूल भूल - भुलैया लगता और हम भटक जाते, वॉशरूम से क्लासरूम का रास्ता भूल जाते फिर हमें ढूंढ कर वापस लाया जाता। चलो अब दूसरे स्कूल लेकर चलती हूँ - दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुलियाजान। मैंने इस नई बिल्डिंग में ही पढ़ना शुरू किया था। क्या आपको पता है 2000 से पहले एक पुरानी बिल्डिंग होती थी DPS की और वहीं मेरी दीदी ने पढ़ाई की थी। तो मैंने DPS में नर्सरी से दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई की है। स्कूल का पहला दिन, मैं घर के सामने से अपनी बिस्कुटी रंग की स्कूल यूनिफॉर्म पहनकर, एक छोटा सा बस्ता लेकर, सामने मम्मी ने रूमाल यूनिफार्म के साथ लगाया था उसे पहनकर पीली रंग की बस में बैठ गई थी। स्कूल पहुंचकर देखा कि पापा तो खड़े हुए हैं, फिर वहाँ से पापा ने पार्क के बीच में से निकाल कर बैठा दिया मुझे नर्सरी 'ए' में। चलो स्कूल की यादें कभी और साझा करूंगी वरना यह लेख तो कभी खत्म ही नहीं होगा। कत्थक सीखना मैंने पाँचवीं कक्षा में शुरू किया, कालीबाड़ी की उस छोटी सी गली में आगे जाकर एक छोटा - सा "संगीत कला अकेडमी" है, वहां की यादें आज भी मेरे दिल के करीब हैं, सब कितने "friendly" थे तबला, हारमोनियम और घुंघरू की आवाज एक साथ पहली बार मैंने बजते हुए यहां सुने थे, उनके बोल यहां सीखे थे। अब अगर नृत्य की बात की है तो संगीत गायन की भी बात कर लेते हैं। मैंने संगीत गायन की प्रारंभिक शिक्षा दुलियाजान क्लब से ली थी और वहीं मुझे मौका मिला "दिहानाम" सीखने और उनके द्वारा बनाए गए इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के इस कार्यक्रम में भाग लेने का मौका। यहां मैंने देखा कि एक रिकॉर्ड बनाने में कितनी मेहनत लगती है, और अगर आज यह सर्टिफिकेट दुलियाजान आया है तो इसके पीछे का कारण है उस बिहुतली में आयोजित "दिहानाम" में भाग लेने वाले हर एक व्यक्ति का जो एक साथ ताल से ताल मिलाकर "दिहानाम" गा रहे थे।

चलो चलते हैं दुलियाजान की ऑयल कॉलोनी का "attraction" - "Zaloni Club" की ओर। क्लब मेरे लिए सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं था बल्कि मैंने यहां से बहुत कुछ सीखा है। "Children's Meet" - इसने मुझे स्टेज पर खड़े होकर लोगों के सामने बोलने के डर से हमेशा दूर रखा है। मैं 2 साल की थी तब पहली बार "Zaloni Club" के ऑडिटोरियम के स्टेज पर खड़ी थी और नाच रही थी या फिर बिल्ली की आवाज़ निकाल रही थी। बड़े होने के साथ-साथ, भाग लेने के लिए "events" भी बढ़ते गए और मैं "participate" करती रही फिर दसवीं कक्षा खत्म होने के बाद हमारे बैच की बारी थी "Children's Meet" आयोजित करने की, मैं चंडीगढ़ से वापस आई थी (जी हाँ मैं दसवीं कक्षा के बाद पढ़ाई के ज़्यादा options ना होने के कारण चंडीगढ़ पढ़ने चली गयी थी) तो पता चला कि "committee" बन चुकी थी। पर कोई बात नहीं, एक बार उस लम्हे को जीना था और ये जानना था कि आखिर "Children's Meet" को आयोजित कैसे किया जाता है, तो सबसे बात करके हम भी हिस्सा बन गए "Querencia" का। "Children's Meet" के बाद मुझे "Club Meet", "Sports Meet", दिवाली, बिहू में भी बड़ा मज़ा आता था। दिवाली में डांडिया, बिहू में रात को मेजी, "Club Meet" में "kids section" की सजावट और "sports meet" का उद्घाटन समारोह ने मुझे भारत की संस्कृति से परिचित करवाया।

दुलियाजान की जितनी बात करूँ, उतनी कम है। पूजा के समय मानो दुलियाजान किसी दुल्हन की तरह सज जाता। संडे मार्किट जो रेलवे स्टेशन के पीछे लगती थी, पापा की स्कूटी के पीछे बैठकर मुँह पर लग रही उस हवा को महसूस करने के बाद, सब्जी खरीदने का मज़ा ही अलग था। फैंसी बाज़ार, ऑयल मार्किट को कैसे भूल सकते हैं। दुलियाजान में रेस्टोरेंट खुलते हुए भी देखे हैं मैंने, पहले नहीं थे ये। पार्टीस के लिए तो संगिनी बाद में #ट्रेडिंग हुआ है पर पहले तो हम घरों में जा-जाकर या बाकी सबको बुला-बुलाकर ही मिलते-जुलते थे। रोज़ गार्डन के गुलाब, घर के पीछे लग रहे चाय के बागान कैसे भूल सकती हूँ मैं।

जी हाँ, दुलियाजान याद आता है मुझे और इस खत के द्वारा मैंने तो वे पल दोबारा जी लिए। आशा है आपने भी कुछ यादें ताज़ा कर ली होंगी। यादों की इस पोटली को यहीं बंद करती हूँ, फिर खोलेंगे मिलकर, कुछ और यादें जिएंगे, कुछ और पल बितायेंगे।

आपकी प्रिय, नवनीता ❑

मन का बच्चा

✍ **जितेन्द्र कुमार**
उप मुख्य भंडारण अभियंता
पश्चिमी परिसंपत्ति, दुलियाजान

चाहे जितनी उमर हो जाए
या बालों का रंग पक जाए
चाहे बड़ी तालीम ही पा लें
या कोई अफसर बन जाएं
पर, हर इंसान के भीतर जिंदा
इक बच्चा होता है ||

बच्चा तो बच्चा होता है
घर आंगन रोशन करता है
सारा जग उसका होता है
बेफिक्र जीना चाहता है
मस्त मलंग रहना चाहता है
पंछी बन उड़ना चाहता है
नील गगन छू आता है
पर, एक उमरदराज मन का बच्चा
कब ये सब कर पाता है |
हां, हर इंसान के भीतर जिंदा
इक बच्चा होता है ||

बच्चों की ख़्वाहिश इतनी सी
ख़्वाहिश की उमर कितनी सी
ओस की बूंदों के जितनी सी
पूरी हो जाए तो सिकंदर है
न हो फिर दूजी का नंबर है
पर, हर समझदार इंसान कहाँ
इतना भी समझ पाता है |
हां, हर इंसान के भीतर जिंदा
इक बच्चा होता है ||

अब बच्चों की बातों का क्या कहना
बोले तो फूल ही झड़ते हैं
न बोले तो सब दास्ताँ
आँखों से बया कर देते हैं
इनके समझने समझाने को
खुद बच्चा होना पड़ता है |
हां, हर इंसान के भीतर जिंदा
इक बच्चा होता है ||

सुबह का सूरज जग जीवन भर
सायंकाल ढल जाता है
उमर के एक पड़ाव पे इंसा
फिर बच्चे-सा बन जाता है
तभी तो, नाना-नानी, दादा-दादी
हर बच्चे को खास होता है |
हां, हर इंसान के भीतर जिंदा
इक बच्चा होता है ||

फूल ही जाने दुश्वारी
कांटों संग खिलना
'जीतू' जटिल जान जगत में
बच्चा बनना
किन्तु जीवन मुक़म्मल जीने हेतु
मन बच्चे को भी, सुनना और समझना पड़ता है |
हां, हर इंसान के भीतर जिंदा
एक बच्चा होता है ||
हां, हर इंसान के भीतर जिंदा
इक बच्चा होता है || ❑

अभी बाकी है

✍ **सुरभि कुंवर गोगोई**
वरिष्ठ नर्स,
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

ईमानदारी और निष्ठा के साथ
जाते जाते दफ़न।
गुजर गया जिंदगी का सफर।
फिर भी नई राह पर
चलना अभी बाकी है।
बीत गई अच्छी बुरी यादों के साथ
सेवा काल की अवधि।
फिर भी परिवार के साथ
नई शुरुआत अभी बाकी है।
जीवन की हर मुश्किल से
खेला है आपने।
फिर भी इस खेल में जीवन का
सार अभी बाकी है। ❑

थोड़ा जी लें

✍ अंजना राजपूत
आश्रित - कमलजीत राजपूत
महाप्रबंधक(सतर्कता),
निगमित कार्यालय, नोएडा

थोड़ा जी लें,
जीवन को भरपूर पी लें।
क्या रखा है इसका-उसका करने में,
जिंदगी ने सिखाया जो सबक वह ले लें।
थोड़ा जी लें,
जीवन को भरपूर पी लें।
रखो अपने कर्म सही,
कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।
बीच मझधार डोले अगर नैया,
शरण ईश्वर की ले लेना।
थाम लेना हाथ उसका विश्वास से,
वह गलत कभी होने नहीं देगा।
कोई कुछ भी कहे, किसी की न सुनना,
करना वही जो तुझे ठीक लगे,
बाकी ईश्वर पर छोड़ देना।
थोड़ा जी लें,
जीवन को भरपूर पी लें।
जो काम करो जी-जान से करो।
बस विश्वासघात किसी से न करो।
अपनी मंजिल को मेहनत से पा लो।
किसी का हक मारने की कोशिश न करो।
जीवन में अच्छे कर्म कर अपना जीवन सुधारो।
सबके जीने का तरीका है अलग,
उसमें न टाँग अटकाओ कभी।
थोड़ा जी लें
जीवन को भरपूर पी लें ❑

चलते चले जाओ

✍ हरि हर उपाध्याय
प्रबंधक (सामग्री),
सामग्री विभाग, दुलियाजान

उम्मीद की किरण जो नज़र आये
तो चलते चले जाओ,
ज़िन्दगी का सूरज जब तक रहे
तो चलते चले जाओ

मोड़ कितने भी आये मगर
मंज़िल न गवाओ
पथ की परवाह किये बिना
यही चलते चले जाओ

बुलंदियों से अपने
हौसले को और बढ़ाओ
शिखर जब तक न मिले
बस चलते चले जाओ

पहुंच के उस शिखर पर
झंडा कामयाबी का लहराओ
चाहे जितना भी ऊँचा शिखर हो
अपने आधार को न भुलाओ

दुनिया तुमको जब तक
सलामी न दे
बस चलते चले जाओ ।। ❑

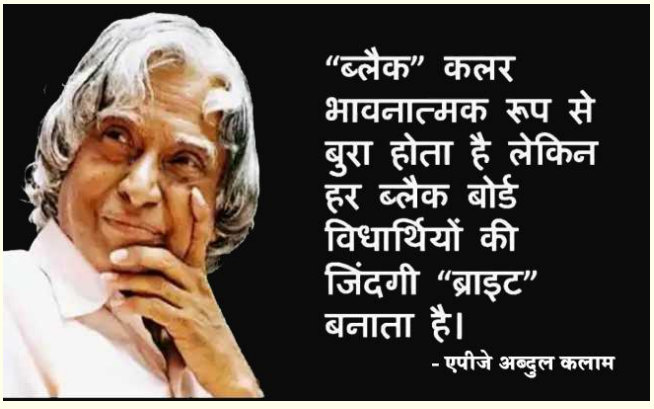

हमारी प्यारी हिंदी भाषा

✍ तामश्री सैकिया बोरा
आश्रित- ऋतुराज बोरा
सामग्री विभाग, दुलियाजान

हिंदी हमारी आशा है, हिंदी हमारी भाषा है,
हिंदी की उन्नति हो यह हमारी अभिलाषा है।
एकता की अनुपम परम्परा है हिंदी,
हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिंदी।

हिंदी को रुकने न देंगे हिंदी को झुकने न देंगे,
हिंदी से सब कुछ सीखा है, इसको कभी मिटने न देंगे।
हिंदी हमारी आत्मा है, भावना का साज़ है,
हिंदी हमारी वेदना, हिंदी हमारा गान है।

एकता के सूत्र में बांधे जो वह है हिंदी,
जिसके बिना हिन्द थम जाए, ऐसी जीवनरेखा है हिंदी।
हिंदी हमारा शब्द, स्वर व्यंजन अमिट पहचान है,
हिंदी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।

विश्व में बोली जाए हिंदी, यह है हमारी आशा,
हिंदी को हमने माना अपनी राष्ट्रभाषा।
हर भाषा को जो सगी बहन मानती वह हिंदी है,
एक डोर में सबको जो है बांधती वह हिंदी है। ❑

सैनिक की पुकार ईश्वर से

✍ आयुष सोमानी
प्रबंधक (सामग्री)
सामग्री विभाग, दुलियाजान

धूल चटा कर आया हूँ प्रभु पास मैं तेरे,
दस-दस को मारकर आया हूँ ईश्वर पास मैं तेरे,

जब तक साँसे चलीं मैदान-ए-जंग में; मैं मौजूद रहा...
फिर ओढ़ तिरंगा आया हूँ ईश्वर पास मैं तेरे,

भेजा था धरा पर तूने कुछ काम करने,
नाम कमा कर आया हूँ ईश्वर पास मैं तेरे,

पुकार रही है भारत माँ मुझ जैसे वीरों को दोबारा,
यही गुज़ारिश लेकर आया हूँ ईश्वर पास मैं तेरे,

कुछ काम बाकी है धरा पर, कर न पाया इस जनम में,
मांगने आया हूँ कुछ और जनम ईश्वर पास मैं तेरे,

कट रहे हैं शीश धरा पर, भारत माँ के सपूतों के,
काटकर लाऊंगा शीश दुश्मनों के ईश्वर पास मैं तेरे,

जल रही हैं चिताएं फौजियों की, धधक रहे हैं अंगारे,
चिता की हर लपट से आ रहे हैं, बस यही नारे...

है कसम तुझको जलती हुई चिताओं की
कर दें मुराद पूरी, जो मांगने आया हूँ ईश्वर पास मैं तेरे। ❑

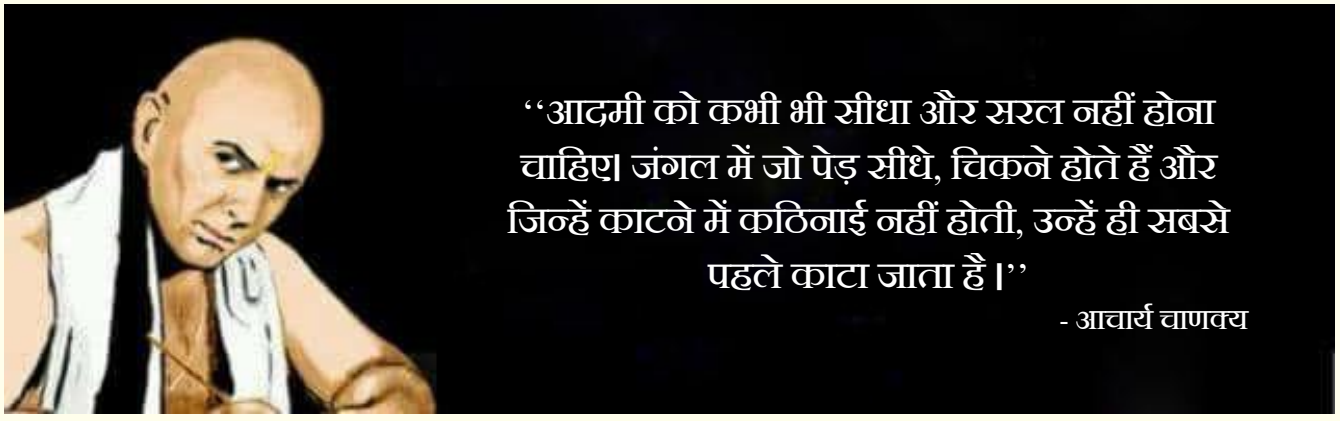

ऑयल इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा दिगंत पुरस्कार से सम्मानित किया गया

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान, असम को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य निष्पादन के लिए वर्ष 2020-21 के लिए भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा "राजभाषा दिगंत" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिनांक 27 से 29 अप्रैल, 2022 तक लोनावला, महाराष्ट्र में भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा 38वां त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन का आयोजन किया गया, जहां लोनावाला नगर परिषद की अध्यक्षा श्रीमती सुरेखानंद कुमार जाधव मुख्य अतिथि तथा उपाध्यक्ष श्री श्रीधर सोमप्पा पुजारी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल तथा श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) ने समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के कर कमलों से उक्त पुरस्कार ग्रहण किया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा राजभाषा प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों के कार्यालयों से सौ से अधिक राजभाषा कर्मियों ने हिस्सा लिया। कुल पाँच सत्रों में आयोजित उक्त प्रशिक्षण शिविर में देश भर से आए हुए विभिन्न अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा राजभाषा नीति, राजभाषा एवं तकनीकी, स्थानीय भाषाओं के साथ हिंदी का संबंध आदि जैसे विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर "प्रथम राजभाषा शील्ड" से सम्मानित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोधपुर क्रमांक एक (1) के द्वारा क वर्ग के कार्यालयों की श्रेणी के अंतर्गत "प्रथम राजभाषा शील्ड" से सम्मानित किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर की सम्मानित अपर मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती गीतिका पांडेय के कर कमलों से दिनांक 28 जनवरी 2022 को आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया गया। प्रदत्त चल वैजयंती प्रथम राजभाषा शील्ड वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा क्रियान्वयन के लिए है।

राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रदान की गई यह शील्ड आप सभी के राजभाषा के प्रति समर्पण, लगन एवं कार्यान्वयन का परिणाम है। इसके लिए आप सभी राजभाषा अनुभाग की बधाई स्वीकार करें। आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप सभी के सहयोग एवं समर्पण से हम राजभाषा के क्षेत्र में भी नित नवीन क्षितिजों को प्राप्त करने में सफल होंगे।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइन मुख्यालय में ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन

डिजिटिकरण से बदलेगी भारत की तस्वीर : श्री संदीप गोस्वामी

ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पाइपलाइन मुख्यालय, कोलकाता कार्यालय तथा के जी बी एवं बी ई पी कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों न भाग लिया। कार्यशाला "डिजिटिकरण की ओर बढते कदमों से ही बदलेगी भारत की तस्वीर" विषय पर केन्द्रित रही। इस कार्यशाला में ऑयल इंडिया के 100 से अधिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों के अतिरिक्त अन्य सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के हिंदी प्रेमी कार्मिक जुड़े। इस कार्यशाला में बतौर विषय विशेषज्ञ डॉ राजीव रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी,आई आई टी खड़गपुर को आमंत्रित किया गया था. कार्यालय का उद्घाटन श्री संदीप गोस्वामी, कार्यपालक निदेशक (पा.ला.) द्वारा किया गया जबकि श्री अवशीष पाल, कार्यपालक निदेशक (के.जी.बी.एवं बी.ई.पी.) तथा श्री ए रॉयचौधरी, मुख्य महाप्रबंधक (कोलकाता कार्यालय) ने शुभाशीर्वाद दिया। स्वागत सम्बोधन श्री माधुर्य बरुआ, महाप्रबंधक (प्रशा. एवं क.सं.) द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने पाइपलाइन मुख्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी को आगे बढाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में तथा विश्व हिंदी दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में भी बताया। कोविड महामारी के चलते यह कार्यशाला वेबिनार वेबैक्स प्लेटफार्म पर आयोजित की गई।

कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री ए रॉयचौधरी द्वारा अपने विचार प्रस्तुत करने के साथ हुआ। उन्होंने अपनी ओर से कार्यशाला के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि भारत सरकार द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए अनेक प्रयास किए हैं तथा अभी भी जारी है. आज हिंदी भाषा में काम करना अत्यंत सरल हो गया है। श्री अवशीष पाल ने कहा कि तकनीक का साथ मिलने से हिंदी भाषा को पंख लग गए हैं देश की सीमाओं को लांघ कर हिंदी अपने आप को विदेशों में स्थापित कर चुकी है। इसी के चलते जितनी भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत में आ रही है वे अपने विज्ञापन तथा वेबसाइट पर हिंदी को बराबर महत्व दे रही हैं। अंत में उन्होंने कहा कि यह पहला अवसर है जब गुवाहाटी कार्यालय द्वारा इतने बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है व इसके लिए मैं गुवाहाटी कार्यालय को अनेक बधाइयां देता हूं तथा कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हूं।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए श्री संदीप गोस्वामी ने कहा कि हिंदी अब जन मानस की भाषा बन चुकी है। हिंदी को जन जन तक पहुंचाने का जो काम तकनीक की मदद से हो रहा है वह इसके बिना सम्भव नहीं था। उनका कहना था कि यदि तकनीक साथ मिले तो भाषा के प्रगति तेजी हो सकती है व जैसा कि हिंदी भाषा की स्थिति में देखने को मिल रहा है। उन्होंने भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर बोलते हुए कहा कि भारत सरकार ने अपने विभिन्न कार्यालयों को राजभाषा हिंदी में काम करने में सक्षम बनाने के लिए एक सुसंगत नीति बनाई हुई है। जिसके चलते सरकारी कार्यालयों में हमें राजभाषा हिंदी में काम किया जाना देखने को मिलता है। उन्होनें यह भी कहा कि ऑयल इंडिया लिमिटेड एक 'पेपर लेस'कम्पनी बनने की दिशा में अग्रसर है तथा हिंदी ई टूल्स की मदद मिलने से कार्मिकों को हिंदी में काम करने में सुविधा होगी और कम्पनी में तेजी से डिजिटिकरण आएगा। आई आई टी खड़गपुर के डॉ राजीव रावत ने "राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में प्रतिभागियों को विस्तार से बताया तथा हिंदी ई टूल्स व सॉफ्टवेयरों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने अपने अनुभवों का लाभ देते हुए प्रतिभागियों को पावरप्वाइंट प्रस्तुतिकरण द्वारा कंठस्थ, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट तथा अन्य एप, वेबसाइट के बारे में बताया. कार्यक्रम का संचालन डॉ वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) द्वारा किया गया जबकि अंत भी उनके द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

ऑयल एवं नाहरकटिया कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान द्वारा नाहरकटिया कॉलेज में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। नाहरकटिया कॉलेज के अध्यक्ष डॉ. ज्योति प्रसाद कोंवर की अध्यक्षता में आयोजित उक्त समारोह में डॉ. कृष्ण दे, उपाध्यक्ष, नाहरकटिया कॉलेज, डॉ. कल्याण बरुआ, पूर्व अध्यक्ष, नाहरकटिया कॉलेज, श्रीमती मामनि देवी, पूर्व प्राध्यापिका,नाहरकटिया कॉलेज, श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल, श्री दिगंत डेका, हिंदी अधिकारी, ऑयल तथा ऑयल के अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण के साथ-साथ नाहरकटिया कॉलेज के प्राध्यापक/ प्राध्यापिकाएं भी उपस्थित थे। नाहरकटिया कॉलेज के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. कृष्ण कांत मालाकार के कुशल संचालन में आयोजित उक्त कार्यक्रम में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए विश्व हिंदी दिवस के इतिहास पर रोशनी डाली तथा विश्व हिंदी दिवस के आयोजन के उद्देश्य के बारे में अवगत कराया। नाहरकटिया कॉलेज के अध्यक्ष डॉ. ज्योति प्रसाद कोंवर ने इस प्रकार के आयोजन हेतु ऑयल प्रबंधन का धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि संसार के किसी भी कोने में जाने के लिए भाषा का ज्ञान होना अत्यंत जरुरी है।

इस अवसर पर विद्यार्थियों के बीच आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। विजयी प्रतिभागियों को गणमान्य व्यक्तियों के करकमलों से आकर्षक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। श्री दिगंत डेका, हिंदी अधिकारी, ऑयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही समारोह का सफल समापन हुआ।

ऑयल, चिकित्सा विभाग द्वारा हिंदी परीक्षा में उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों के लिए पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के चिकित्सा विभाग द्वारा राजभाषा विभाग, हिंदी शिक्षण योजना द्वारा आयोजित प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत परीक्षाओं में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने वाले अपने कार्मिकों को पुरस्कृत तथा सम्मानित किया गया। डॉ. शांतनु बैश्य, मुख्य महाप्रबंधक (चिकित्सा सेवाएं) की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में डॉ. अजय कुमार शर्मा, मुख्य महाप्रबंधक (चिकित्सा सेवाएँ-शिशु रोग), डॉ. नवनीत स्वरगिरी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा), श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) के साथ-साथ चिकित्सा विभाग के अन्य चिकित्सकगण तथा अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. नवनीत स्वरगिरी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा) तथा नामित राजभाषा अधिकारी, चिकित्सा विभाग ने उपस्थित सभी को कार्यक्रम की रूपरेखा तथा उद्देश्य के बारे में अवगत कराया। श्री नीलोत्पल कोंवर, अस्पताल प्रशासक, चिकित्सा विभाग तथा श्रीमती रंजिता दत्ता हैंडिक, वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

श्री शांतनु बैश्य, मुख्य महाप्रबंधक (चिकित्सा सेवाएं) ने अपने भाषण में उत्तीर्ण सभी प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएं दी तथा सभी से राजभाषा के कार्यन्वयन में अपना भरपूर सहयोग देने की अपील की। इसके अलावा उन्होंने ज्यादा से ज्यादा कार्मिकों को इन परीक्षाओं में भाग लेने के लिए आह्वान किया।

श्री हरेकृष्ण बर्मन ने उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा अनुभाग सदैव अपने कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए सक्षम बनाने हेतु तत्पर है। उन्होंने इस प्रकार के आयोजन के लिए चिकित्सा विभाग को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से कार्मिकों के बीच राजभाषा के प्रति आकर्षण बढ़ेगा तथा बाकी कार्मिकों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त उन्होंने ऑयल में राजभाषा के कार्यन्वयन की दिशा में किए जा रहे विभिन्न कार्यों के बारे में सभी को अवगत कराया। श्रीमती सुरभि कोंवर गोगोई, वरिष्ठ नर्स के धन्यवाद ज्ञापन से उक्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा संवाद कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 25 मार्च, 2022 को ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के राजभाषा अनुभाग एवं क्षेत्र संचार विभाग द्वारा अपने कार्मिकों के लिए एक राजभाषा संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री अनिल कुमार देवचौधुरी, महाप्रबंधक (क्षेत्र संचार), ऑयल की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) के अतिरिक्त बड़ी संख्या में ऑयल के अधिकारी व कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री अनिल कुमार गौतम, उप मुख्य अभियंता (क्षेत्र संचार), ऑयल ने उपस्थित सभी को कार्यक्रम की रूपरेखा तथा उद्देश्य के बारे में अवगत कराया। श्री अनिल कुमार देवचौधुरी, महाप्रबंधक (क्षेत्र संचार), ऑयल ने अपने उद्घाटन भाषण में उपस्थित सभी से आग्रह किया कि वे इस प्रकार के संवाद कार्यक्रम से लाभ उठाने का प्रयास करें और ऑयल में राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में अपना भरपूर सहयोग प्रदान करें।

श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा अनुभाग सदैव अपने कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए सक्षम बनाने हेतु तत्पर है। उन्होंने भारतीय संविधान में दिए गए राजभाषा से जुड़े प्रावधानों तथा राजभाषा अधिनियम, नियम आदि के बारे में विस्तार से सभी को अवगत कराया। उन्होंने राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में आ रही कठिनाइयों को दूर करने हेतु विभिन्न सुझाव दिया।

श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा), ऑयल ने उपस्थित सभी के समक्ष कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप के ऊपर एक स्लाइड प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने ऑयल में राजभाषा के कार्यन्वयन की दिशा में किए जा रहे विभिन्न कार्यों के बारे में सभी को अवगत कराया।

श्री अनिल कुमार गौतम, उप मुख्य अभियंता (क्षेत्र संचार), ऑयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उक्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की 41वीं बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान की अध्यक्षता में दिनांक 05 मई, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 41वीं बैठक संपन्न हुई। ऑयल के मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं नराकास-दुलियाजान के अध्यक्ष श्री पलाश गोगोई की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठक में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री भास्कर बाबू, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री देवाशीष बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल, श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल, श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा), ऑयल उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने बैठक में उपस्थित होकर अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव, श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने विभिन्न कार्यालयों से उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। विभिन्न कार्यालयों के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित रिपोर्टों की समीक्षा की गई। श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा), ऑयल ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित समेकित तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, गुवाहाटी ने सभी कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की और उचित कार्रवाई हेतु सभी कार्यालयों को आवश्यक निदेश दिया गया। उन्होंने उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया कि प्रत्येक तिमाही में तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन

भरा जाए तथा उसकी एक प्रति नराकास, दुलियाजान को भी अवश्य प्रेषित करें। उन्होंने बैठक के सफल आयोजन के लिए ऑयल इंडिया लिमिटेड को धन्यवाद दिया।

श्री भास्कर बाबू, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने उपस्थित सभी को प्रशिक्षण से संबंधित जानकारी प्रदान की। इसके अतिरिक्त उन्होंने सभी से आग्रह किया कि जिन कार्यालयों में प्रशिक्षण देना शेष है, उन्हें यथाशीघ्र प्रशिक्षण हेतु नामित करने का व्यवस्था करें।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री पलाश गोगोई, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल ने कहा कि ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की बैठक हमेशा समय पर आयोजित की जाती रही है। उक्त बैठक में सदस्य कार्यालयों से अधिक संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित करें। श्री देवाशीष बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 41वीं बैठक समाप्त हुई।

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा कोलकाता कार्यालय का निरीक्षण

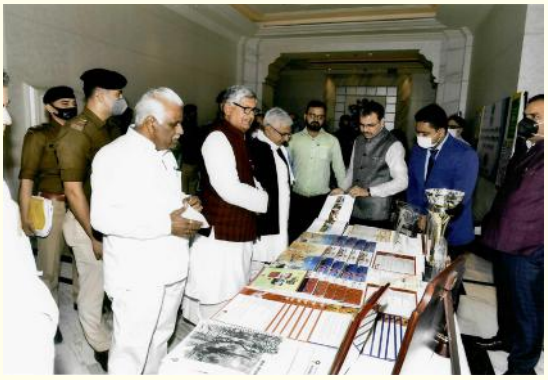

दिनांक 21.02.2022 को संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा कोलकाता कार्यालय का निरीक्षण किया गया। होटल आई टी सी रॉयल बंगाल के सम्मेलन कक्ष में ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में हो रही राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का निरीक्षण करते हुए उप समिति के कार्यकारी अध्यक्ष एवं संयोजक माननीय श्री रामचन्द्र जांगड़ा (संसद सदस्य-राज्यसभा) तथा अन्य माननीय सदस्यों ने संतोष अभिव्यक्त किया व कोलकाता कार्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा भी की। संसदीय राजभाषा समिति को ओर से श्री रामेश्वर लाल मीणा, श्री विक्रांत भाटिया, श्री सहदेव सिंह सहित अन्य अधिकारी सम्मेलन कक्ष में उपस्थित थे। ऑयल इंडिया लिमिटेड का प्रतिनिधित्व श्री हरीश माधव, निदेशक (वित्त), निदेशक (मानव संसाधन) द्वारा किया गया तथा बैठक में श्री अशोक दास, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन), श्री अंशुमान रॉयचौधुरी, मुख्य महाप्रबंधक (कोलकाता कार्यालय), डॉ. आर झा उप महाप्रबंधक (राजभाषा), डॉ.वी एम बरेजा, उप महाप्रबन्धक(राजभाषा) भी शामिल हुए। निरीक्षण प्रक्रिया प्रारम्भ करने से पूर्व संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के कार्यकारी अध्यक्ष सहित सभी सदस्यों द्वारा ऑयल इंडिया की ओर से इस अवसर पर लगाई गई विशेष प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई तथा भविष्य में ऐसे प्रयासों को जारी रखने की इच्छा अभिव्यक्त की गई।

कोलकाता कार्यालय में कार्मिकों के लिए एक उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 21.04.2022 को कोलकाता कार्यालय में कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के अवसर पर श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए । जबकि कार्यशाला में स्वागत भाषण कोलकाता कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक श्री ए. रॉयचौधुरी द्वारा प्रस्तुत किया गया । उन्होंने कहा कि कोलकाता कार्यालय सदैव राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के प्रति सदैव गम्भीर रहा है । कार्यशाला में शामिल हुए कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने हिंदी कार्याशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला । आज तकनीक की मदद से हिंदी भाषा में काम करना सरल एवं सुविधाजनक हो चुका है । हम भारतीयों को इसका लाभ उठाते हुए क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान देते हुए उन भाषाओं के शब्दों को हिंदी भाषा में शामिल कर इस भाषा को और अधिक विस्तार देना चाहिए । विशेष वक्ता श्री दुबे ने कार्मिकों को राजभाषा नियम अधिनियम के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित किया उन्होंने बताया कि यदि कार्मिक अपने कार्य की शुरुआत में रोमन हिन्दी से भी करें तो उन्हें इसके लिए संकोच नहीं करना चाहिए । इससे धीरे-धीरे उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी । उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता कोलकाता कार्यालय के लिए अधिक है क्योंकि इन कार्यशालाओं में कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी मिलती है तथा उन्हें हिन्दी में कार्य करने का अभ्यास भी कराया जाता है । प्रसंगित कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों के कुल 15 कार्मिकों ने भाग लिया । कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा रचित कहानियों की पुस्तक प्रदान की गई । डॉ. वी एम बरेजा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

राजभाषा अनुभाग जन संपर्क विभाग CIN : L11101AS1959GOI001148